छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास : पौष-माघ, संवत् 2074

जनवरी 2018

ओ३म्

अंक 148, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

एक ऐतिहासिक कदम

आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़
(डॉ. कमलनारायण आर्य) का
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
(आचार्य अंशुदेव आर्य) में विलय

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम प्रांगण टाटीबन्ध रायपुर में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर सम्पन्न तीन दिवसीय विश्व कल्याण महायज्ञ की चित्रमय झलकियाँ

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७४
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११९
दयानन्दाब्द - १९४

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री जोगीराम आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 9977152119)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक :
श्रीनारायण कौशिक

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क-१००/- दसवर्षीय-८००/-

वर्ष - १३, अंक ७ — ओ३म् — मास/सन् - जनवरी २०१८

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं ।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सञ्ज्ञसञ्ज्ञकम् ,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे ॥

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	तेरी देन को कोई रोक नहीं सकता	स्व. रामनाथ वेदालंकार	०४
२.	मानवता के स्वर्णिम सूत्र हैं वेदों में	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	देश की उन्नति का आधार देशवासियों का शिक्षित, संस्कारित और सत्यधर्म पालक सहित सच्चरित्र होना	मनमोहन कुमार आर्य	०८
४.	दिव्य गुणों से शरीर, मन व बुद्धि स्वस्थ होते हैं	डॉ. अशोक आर्य	१०
५.	कैसा हो हमारा नया साल	श्री विनोद बंसल	१२
६.	किशोवय की कुंठा एवं समस्या	स्व. गीताचन्द	१४
७.	अनेक पर्वों का पुञ्ज : मकर संक्रान्ति	ले. मनुदेव 'अभय'	१६
८.	योग : जीवन का विज्ञान एवं दर्शन	डॉ. रघुवीर वेदालंकार	१९
९.	विश्व शान्ति का केवल एक ही मार्ग है – वैदिक धर्म	खुशहालचन्द्र आर्य	२२
१०.	कविता : क्या यही गणतन्त्र है	श्रीमती दीपाली	२४
११.	पंजाब केशरी लाला लाजपतराय	डॉ. भवानीलाल भारतीय	२५
१२.	स्वतन्त्रतानन्द जी तो स्वतन्त्रतानन्द ही थे	स्वामी सदानन्द सरस्वती	२८
१३.	होमियोपैथिक सम्पूर्ण रोगों का उपचार	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	३०
१५.	समाचार प्रवाह		31

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है ।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक – आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया ।

तेरी देन को कोई रोक नहीं सकता

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

न ते वर्तास्ति राधसः, इन्द्र देवो न मर्त्यः।
यद् दित्ससि स्तुतो मघम्॥ ऋग्. ८.१४.४

ऋषिः **गोषूक्त्यश्वसूक्तिनौ काण्वायनौ**। देवता **इन्द्रः**। छन्दः **गायत्री**।

● **(इन्द्र)** हे परमेश्वर्यशाली परमात्मन्! **(न देवः)** न देव **(न मर्त्यः)** न साधारण मनुष्य **(ते)** तेरे **(राक्षसः)** सफलता या ऐश्वर्य का **(वर्ता)** निवारक **(अस्ति)** होता है, **(यत्)** जब **(स्तुतः)** स्तुति का विषय (होकर) **(मघं)** ऐश्वर्य को **(दित्ससि)** (तू) देना चाहता है।

जब मैं किसी लक्ष्य को सम्मुख रखकर उसकी प्राप्ति के लिए जी-तोड़ प्रयास करता हूँ, कर्म करता हूँ, तब भी कभी-कभी मुझे सफलता नहीं मिलती और कभी सफलता ऐसे आकर चरण चूम लेती है, मानो बिना प्रयास के ही मिल गई हो। जब मैं इसका कारण सोचता हूँ, तब इस परिणाम पर पहुंचता हूँ कि ईश्वर-विश्वास की कमी ही सफलता की प्रतिरोधक होती है, और जब कर्म के साथ ईश्वर-विश्वास की सुगन्ध आ मिलती है, तब सफलता इतनी त्वरित गति से पास आ पहुंचती है, मानो पास खड़ी हुई निमन्त्रण की प्रतीक्षा ही कर रही हो।

हे इन्द्र! हे परम ऐश्वर्यों के अधिपति परमात्मन्! जब मनुष्य तुम्हारी सच्चे हृदय से स्तुति करता है, तुम्हें स्मरण करता है, तुम पर तीव्र विश्वास रखकर किन्हीं आध्यात्मिक या भौतिक ऐश्वर्यों को प्राप्त करने के लिए परिश्रम करता है, तब तुम रुक नहीं सकते, स्वयं अपने हाथों से उस पर ऐश्वर्यों का दान करने के लिए तत्पर हो जाते हो, और क्षणभर में उसे अभीष्ट ऐश्वर्यों का स्वामी बना देते हो। जब तुम अपने स्तोता को ऐश्वर्य देने का संकल्प कर लेते हो तब कोई कितना ही बीच में विघ्न डालना चाहे, बाधक नहीं बन सकता। न कोई उच्च पद पर विद्यमान राजाधिकारी, न कोई साधारण मनुष्य स्तोता की ओर तुम्हारे पास से तीव्र गति से आती हुई, ऐश्वर्य की धारा को रोक सकता है। न ही मन, इन्द्रियाँ, प्राण आदि देव उन्मार्गगामी होकर बाधक बन सकते हैं। न ही मनुष्य का सर्त्यत्व या मरणधर्मत्व बाधक हो सकता है। ईश्वर-भक्त को कोई नहीं कह सकता कि तुम तो मरणधर्मा हो, इतने उच्च ऐश्वर्यों को पाने का स्वप्न कैसे ले रहे हो, ऐसे परम ऐश्वर्य तो अनेक जन्मों के प्रयत्न के पश्चात् ही किसी को मिल पाते हैं। ईश्वर पर सच्चा विश्वास रखने वाले मनुष्य के सम्मुख समय भी बाधक नहीं बनता, उसे अल्प समय में भी बड़ी से बड़ी उपलब्धियां हो जाती है।

हे जगत्पति! हे मेरे हृदय-मन्दिर के देव! आज से मैं भी तुम्हारा स्तोता बनता हूं, तुम पर अविचल श्रद्धा रखकर दिव्य ऐश्वर्यों की कामना से पुरुषार्थ में प्रवृत्त होता हूं। मुझे विश्वास है कि तुम मुझे दोगे, तुम्हारी मेरे प्रति आती हुई दिव्य देन को कोई रोक नहीं सकता।

संस्कृतार्थ :- १. राघस् धन (निघं. २.१०) सफलता (राध संसिद्धौ)

सम्पादकीय

मानवता के स्वर्णिम सूत्र हैं-वेदों में

आज जब हम सृष्टि में दृष्टि उठाकर देखते हैं, तो हमें अनेकानेक जीव और प्राणी दिखाई देते हैं। यदि इन सब की योनियों की गणना करना चाहें, तो स्थिति यह होगी कि हमारा जीवन तो समाप्त हो जावेगा, परन्तु इनकी गणना पूरी न हो पायेगी। यह दूसरी बात है कि पौराणिक ग्रन्थों में इनकी गणना ८४ लाख कही गई हैं, जबकि इस ब्यौरे का कोई शास्त्रीय प्रमाण नहीं मिलता, परन्तु इतना निश्चित है कि मानव-योनि सर्वश्रेष्ठ है। मानव को ज्ञान (वेद) मिला है और उसे जानने को बुद्धि एवं व्यक्त करने को वाणी। इससे बढ़कर मानव को कर्म और भोग दोनों ही मिले हैं, जबकि अन्य योनियों में कहीं कर्म है तो कहीं भोग।

मानव की श्रेष्ठता तभी तक है, जब तक कि मानव मानव है और मानव का आधार है मानवता। मानवता से तात्पर्य मानवीय गुणों के व्यावहारिक स्वरुप से है, जिनका उपदेश हमें वेद से मिलता है। वेद कहता है कि मनुष्य बन और देवहित-कारी जन पैदा कर। वेद को ऐसा कहने की आवश्यकता क्यों पड़ी ? उत्तर खोजने के लिए कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं, अपितु हमें अन्तर में झांकना होगा और जानना होगा कि यदि हम मनुष्य हैं तो हमारा परस्पर प्रेमभाव क्यों नहीं ? हमारे सुख-दुःख सांझे क्यों नहीं ? क्या कारण है कि हम एक दूसरे को सन्देह की दृष्टि से देखते हैं। आज हमने विज्ञान की सहायता से हजारों मील की दूरियां तो सिमटा ली हैं, परन्तु मनों में खड़ी हिमालय से ऊंची दीवारों को नहीं गिरा सके। ऐसीस्थिति में भी क्या हम अपने को मानव कह सकने के अधिकारी हैं ? सम्भवतः नहीं। क्योंकि हमने नहीं जाना कि मानवता क्या है ? तभी तो हम संकीर्ण भावनाओं में जकड़े हुए हैं। हम हिन्दू हैं, मुसलमान है, सिख हैं, ईसाई हैं, बौद्ध है, जैन है, परन्तु मानव नहीं। क्योंकि हम परस्पर घृणा, ईर्ष्या एवं द्वेष करते हैं। हमें इन संकीर्ण दायरों को छोड़कर यह जानना होगा कि हम सब में एक ही आत्मा है और हमें बनाने वाला भी एक (ईश्वर) ही है। इस प्रकार हम सब भाई-भाई हैं।

जब मानव संकीर्ण भावनाओं से ऊपर उठता है, तभी वह अपने सामाजिक महत्व को समझता है। तभी उसे इस बात की सच्ची अनुभूति होती है कि वह एक सामाजिक प्राणी है और उसका सम्बन्ध दम्पती, कुटुम्ब, जाति, समाज व समस्त संसार से है। ऐसे में ही दम्पत्ती के रुप में मानव अपने कर्त्तव्य को समझता एवं यज्ञादि श्रेष्ठ कर्म करता हुआ अपने पग देवत्व की ओर बढ़ाता है। तभी वह माता-पिता व पुत्र के परस्पर सम्बन्धों को जान पाता है, एवं आनन्दित होता है, पति के प्रति पत्नी की मधुरता, भाई-भाई व बहन-बहन के द्वेष-रहित व्यवहार को देखकर मानव का पग यहीं पर नहीं रुक जाता, अपितु वह आगे बढ़ता है और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र के विश्वास को जीत कर सब का प्रिय बनता है। इस प्रकार वह ऐसी स्थिति में पहुंच जाता है, जहां वह मानव मात्र का एक ही जन्म स्थान मान सभी को भाई मानता है, किसी प्रकार का मन-मुटाव नहीं रखता और न ही द्वेष की भावना। तब मानव का मानव के प्रति वही सच्चा प्यार होता है, जो एक गाय अपने सद्य-जात बछड़े से करती है।

इस प्रकार मानव, मानवता को जान और पहचान लेता है। परन्तु इस स्थिति पर पहुंचने के लिए मानव को अभी बहुत कुछ करना बाकी है। मानवता की बात करना जितना सरल है, उतना ही कठिन हो जाता है इसे व्यावहारिक रुप देना। ईश्वर ने मानव को वाणी दी है और वाणी का प्रयोग भी मानव को करना है। परन्तु कैसे? यह विचारणीय है। क्योंकि यही वाणी दो रुठे हुओं को मिला देती है, तो इसी वाणी द्वारा प्रकट किये गये एक ही कटु शब्द से, दो मित्रों के मन में वैमनस्य भी पैदा हो जाता है। तभी तो वेद कहता है कि मानव प्रीतियुक्त मीठी वाणी बोले। इतना ही नहीं, मानव को यह भी जानना चाहिये कि भोग प्राप्ति का साधन भी मधुर वाणी है। मानव सामाजिक प्राणी है, अतः वह समाज की सभाओं, संगतों और गोष्ठियों में ही सहयोग, ज्ञान और शान्ति की तलाश करता है। परन्तु पाता है उपहास, घृणा और अशान्ति। कारण होता है मानव की वाणी का अनुचित प्रयोग। जहां वेद समाज में विचरते हुए नर की सभाओं और संगतों में मधुर एवं सत्य भाषण का आदेश देता है वहां मानव अज्ञान-वश ऐसी कटु वाणी का प्रयोग करता है, जो मानव के प्राणों एवं हृदय को दग्ध कर देती है। जबकि मानवता ऐसी वाणी के परित्याग की अपेक्षा करती है।

इस प्रकार मानवता की आधार-शिला को स्थायित्व देती है वाणी और वाणी को आधार देती है मानव की दृष्टि तभी तो आचार्य भृतहरि को लिखना पड़ा - **"क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्"**। मानव की दृष्टि में भी एक बड़ी शक्ति निहित है। अनेकों को दृष्टि से घायल होते देखा गया है, तो बहुतों को निकट आते। क्रोधी मनुष्य की आंखें लाल होती है, जिनका सामना करना कठिन हो जाता है। दूसरी ओर, जब बालक विह्वल हो माता की ओर देखता है, तो माता की ममता प्रदीप्त हो उठती है। तभी तो वेद में स्थान-स्थान पर कहा गया है कि हमारी दृष्टि मधुर हो। दृष्टि की

मधुरता शत्रु को भी मित्र बना देगी। क्रोधी से क्रोधी मानव को भी दृष्टि के प्रभाव से जल की भांति शीतल होते देखा गया है। दृष्टि की महिमा बढ़ी है। यह हंसतों को रुला देती है और रोतों को हंसा देती है। परन्तु ध्यान देने योग्य बात यह है कि दृष्टि की मधुरता मात्र मानव के लिए ही न होकर सभी जीव-जन्तुओं के प्रति हो। हम सभी को मित्र की दृष्टि से देखें और मित्र भी कैसा, जो मित्र के वचन को व्यर्थ न जाने दे। उचित ही तो कहा है कि यदि मित्र समय पर साथ न दें तो वह मित्र कैसा ? समय-कुसमय मित्र का सहारा सबसे बड़ा सहारा होता है। ऐसी ही दृष्टि मानव का कल्याण करती है।

मानव की दृष्टि को प्रभावित करती है उसकी श्रवण-शक्ति। निसन्देह हम जैसा सुनेंगे वैसा ही हमारे मन पर प्रभाव पड़ेगा और प्रभाव हमारी दृष्टि को प्रभावित करेगा। अतः मानव भला और भद्र सुने। इस प्रकार जहां वेद मानवता के पथ पर बढ़ने का पथ दिखलाता है, वहां पथ के कांटों को दर्शाते हुए उन्हें हटाने की प्रेरणा भी करता है। वे कांटे हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर। इसके साथ ही हिंसा, चोरी, व्याभिचार, मद्यपान, जुआ, असत्य-भाषण और इन पापों के करने वाले दुष्टों का सहयोग न करने का भी वेद आह्वान करता है।

अन्त में मैं वेद की उस बात को कहना चाहूंगा, जिसे यदि मानवता की रीढ़ की हड्डी कहूं तो अतिशयोक्ति न होगी। वह बात है, जीवन को यज्ञमय बनाना, अर्थात् यज्ञ से जीवन को सफल करना। यज्ञ से तात्पर्य है स्वार्थ से ऊपर उठना। बांट कर खाना और इस बात को जीवन का आदर्श बनाना कि अकेला खाने वाला पापी होता है। केवलाद्यो भवति केवलाद्यी इस प्रकार मानवता की यह सबसे बड़ी कसौटी है कि हम बांट कर खाएँ। चाहे हम श्रद्धा से दें अथवा अश्रद्धा से। शोभा से दें अथवा लज्जावश या हम भय से दें, परन्तु हम दें अवश्य। क्योंकि मानव समाज में सभी मानव एकसमान नहीं। बुद्धि-बल एवं कार्य शक्ति से कोई निर्धन है तो कोई अमीर। कोई समर्थ है तो कोई असमर्थ। यथा हमारे हाथ की उगंलिया। वेद मानव का पथप्रदर्शक है तो मानव, मानवता का पुजारी। वेद एक ऐसा सागर है, ज्यों-ज्यों हम इसका मंथन करते हैं, त्यों-त्यों मानवता-रुपी पीयूष का पान करते हैं। तब यह मानव पर निर्भर है कि वह अपने जीवन के कटोरे को भर कर व्यावहारिकता प्रदान कर मानव-समाज को सुखमय बनाये।

अतः आइए ! आज की समस्त मानवीय समस्याओं का एक मात्र समाधान वैदिक आचरण संहिता को जानकर आत्मसात् करने का सत्प्रयास प्रारंभ करें। क्योंकि यह निर्भ्रान्त और उदात्त होने के कारण से संसार के समस्त विक्षोभ और घृणा को समूलोन्मूलनार्थ सक्षम है, प्रेम भाई चारा और शान्ति तथा सह अस्तित्व कायम करने का यही श्रेष्ठ एवं अन्तिम मार्ग है। **नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय।**

- आचार्य कर्मवीर

राष्ट्रीय

"देश की उन्नति का आधार देशवासियों का शिक्षित, संस्कारित और सत्यधर्म पालक सहित सच्चरित्र होना"

- मनमोहन कुमार आर्य

हमारे देश भारत में नाना प्रकार की समस्यायें हैं जिनका हल सरकार व सभी मतों व इतर विद्वानों के पास भी नहीं है। कुछ विद्वान जानकर भी कुछ ऐसे उपायों का उल्लेख करने से डरते हैं जिससे कि समाज के कुछ वर्गों व मत-सम्प्रदाय के लोगों के उचित-अनुचित हित जुड़े हुए होते हैं। महर्षि दयानन्द भारत में एक निर्भीक, साहसी, सच्चे ज्ञानी, ईश्वर और देश भक्त महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने देश व विश्व की सभी समस्याओं पर संकीर्णता से ऊपर उठकर विचार किया व उनके समाधान प्रस्तुत किये हैं। उनके जीवन दर्शन का अध्ययन कर यह स्पष्ट विदित होता है कि यदि देश को सही अर्थों में उन्नति करनी है तो उसके लिए देश के सभी ज्ञानी व विद्वानों को मत-मतान्तरों व नाना सामाजिक वर्ग-सम्प्रदायों, गुरुडमों आदि से ऊपर उठकर निष्पक्ष भाव से वेद के आलोक में देश की प्रमुख समस्याओं पर विचार करना होगा। ऐसे करने पर सभी समस्याओं के समाधान प्राप्त हो सकेंगे। इसमें पहली मुख्य बात तो यह होगी कि हम समस्या के सत्य व अशत्य स्वरुप को जान सकेंगे और सत्य को हटाकर असत्य विचारों को देश से दूर कर सकेंगे। सत्य को जानने व प्राप्त करने के उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए ही वेदों के सच्चे अधिकारी ऋषि दयानन्द ने अपने अध्ययन व जीवन के निष्कर्षों पर आधारित ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश लिखा। यदि इस ग्रन्थ को निष्पक्ष भाव से पढ़कर समझ लिया जाये तो निश्चय ही देश की सभी समस्याओं का हल प्राप्त किया जा सकता है। ऐसा होना तभी सम्भव है कि जब हम अपने व पराये मत का पक्षपात छोड़कर सत्य को जानने व उसे स्वीकार करने की प्रतीज्ञा करें व उसका सही व व्यावहारिक रुप में पालन भी करें। ऐसा होने पर हम सत्य शिक्षा, सत्य संस्कारों, सद्धर्म वेद और सच्चारित्रता को प्रत्येक नागरिक के जीवन में प्रविष्ट कराना होगा। ऐसा करना ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य भी है। सभी देशवासी अपने जीवन में सुशिक्षा व सद्ज्ञान को प्राप्त करें, अच्छे संस्कारों से युक्त हों और वेदानुरुप ईश्वर व समाज हित के कार्यों को करते हुए सब सच्चरित्र बन कर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करें इसका प्रबन्ध देश की सरकार व समाज के प्रमुख बुद्धिजीवियों को करना चाहिए। यही सच्ची उन्नति व विकास है। यदि यह नहीं किया गया तो फिर कितनी भी भौतिक उन्नति कर ली जाये वह यथार्थ न होकर केवल कथन मात्र के लिए उन्नति होगी, यथार्थ में नहीं। समस्यायें बढ़ेंगी, कम नहीं होगी। देश कमजोर होगा और जैसे मतान्तर होकर विश्व के अधिकांश देश बने हैं वैसा ही भारत हो जायेगा जिसमें सच्चा वेद धर्म, पुनर्जन्म व परजन्म के विचार तथा कर्म फल सिद्धान्त आदि सब खो पायेंगे।

शिक्षा किसे कहते हैं? शिक्षा उसे कहते हैं जिसके द्वारा मनुष्य इस संसार को जानता है, जीवन के सत्य व असत्य, उचित व अनुचित कार्य, कर्त्तव्य, अकर्त्तव्य, भलाई व बुराई स्वहित, समाजहित, देशहित व वैश्विक कल्याण को जानकर उन सभी कार्यों को करता है व उनका अन्यों में प्रचार कर उन्हें वैसा करने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित करता है। शिक्षा एक प्रकार से नेत्र के समान है जिससे वह पदार्थो व सभी विषयों के सत्य व असत्य स्वरुप को जानता है। अविद्या का नाश कर विद्या की वृद्धि ही शिक्षा का उद्देश्य व लक्ष्य होता है। सम्प्रति शिक्षा के अन्तर्गत वर्णोच्चारण शिक्षा से लेकर अष्टाध्यायी, महाभाष्य आदि ग्रन्थों के अध्ययन व अनेक भाषाओं का ज्ञान प्रदान करने वाले साहित्य के अध्ययन को भी सम्मिलित कर सकते हैं। उदाहरणार्थ अंग्रेजी की वर्णमाला व उसके व्याकरण व शब्दकोश के ज्ञान व

भाषा के उच्चारण व इसी प्रकार अन्य भाषाओं के ज्ञान व उसमें अध्ययन अध्यापन की क्षमता व सामर्थ्य सहित उस भाषा को अधिकारपूर्वक बोलने की दक्षता प्राप्त करने को मान सकते हैं। जिन जिन भाषा में जो महत्वपूर्ण साहित्य है उसका ज्ञान व उससे लाभ उठाना भी हमारे विचार में कुछ कुछ शिक्षा में ही आता है। भाषा का इतना अधिक प्रतिकूल प्रभाव नहीं होता जितना की मनुष्य उस भाषा में उपलब्ध अच्छे व बूरे साहित्य को पढ़कर उन्नत व पतन को प्राप्त होता है। जो परा व अपरा विद्या अर्थात् आध्यात्मिक व भौतिक ज्ञान वेदों में है वह ज्ञान अन्य किसी भाषा के ग्रन्थों में नहीं है। अतः ईश्वर प्रदत्त सम्पूर्ण सद्ज्ञान के ग्रन्थ वेदों की भाषा वैदिक संस्कृत का ज्ञान सबको होगा तभी ज्ञान व विज्ञान सहित शिक्षा, संस्कार व नैतिक गुणों के महत्व व उसके लाभों को देश के सभी लोग जान सकते हैं। संस्कृत, वैदिक भाषा का दूसरा विकल्प हिन्दी का ज्ञान होना भी है। इसका कारण यह है कि वेदों के हिन्दी भाष्य व प्रायः अधिकांश वैदिक साहित्य हिन्दी भाषा में अनुवाद के रुप में उपलब्ध है। यदि अन्य भाषा का शिक्षित कोई मनुष्य संस्कृत व हिन्दी भाषा में अनुवाद के रुप में उपलब्ध है। यदि अन्य भाषा का शिक्षित कोई मनुष्य संस्कृत व हिन्दी भाषाओं को नहीं जानता तो वह ईश्वर की वाणी वेदों को जानकर उससे लाभान्वित नहीं हो सकता। ऐसा ही सम्प्रति देश व विश्व में हो रहा है जिसके कारण समाज में अनेक प्रकार की समस्यायें उत्पन्न हो गई है। इसका एक ही उपाय है कि सभी मतों में से एक दूसरे के विरोधी व हानिकारक मान्यताओं को कह सकते हैं। इसका एक ही उपाय है कि सभी मतों में से एक दूसरे के अकारण व अनावश्यक विरोध की बातों को हटाया जाना चाहिये। यही बात ऋषि दयानन्द जी ने कही थी और सर्वमान्य सिद्धान्तों को भी सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम दस समुल्लासों व ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश तथा आर्योद्देश्यरत्नमाला में प्रस्तुत किया था। ऋषि ने एक बार कहीं यह कहा भी है कि इस पृथ्वी के लिए वह दिन सबसे उत्तम, स्वर्णिम व श्रेष्ठ होगा कि जब पूरे विश्व व देश में एक भाषा, एक भाव, एक सुख-दुख व एक समान सोच व विचारधारा सभी मनुष्यों में देखने को मिलेगी। वेद भी मनुष्य का यही लक्ष्य बताता है कि सभी मनुष्यों के विचार, मन, भावनायें, हित-अहित आदि एक समान हो। वेद के संगठन सूत्र के चार मंत्रों में यही सन्देश दिया गया है।

हमने देश उन्नति के कुछ प्रमुख साधनों का शीर्षक में उल्लेख किया है। इनमें से यदि एक साधन को भी सिद्ध कर लिया जाये तो देश की उन्नति पर उसका अच्छा प्रभाव पड़ सकता है। शिक्षा को ही लें, यदि देश के सभी लोग वेदों व वेदापांग शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त आदि के अध्ययन सहित अन्य भाषाओं व ज्ञान विज्ञान का अध्ययन करें तो उसका प्रभाव देश के सभी नागरिकों के जीवन, संस्कारों आदि पर पड़ेगा जिससे वह वर्तमान की अपेक्षा अधिक सभ्य व सच्चरित्र हो सककते हैं। ऋषि दयानन्द जी व अन्य आर्य महापुरुषों के जीवन पर जब दृष्टि डालते हैं तो लगता है कि यदि ऐसे कुछ ही महान् व्यक्ति हमारे देश में हो जाये तो देश का कायाकल्प हो सकता है। वेदों व सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों का जिन लोगों ने अध्ययन कर उसमें निहित विचार व ज्ञान को जान लिया है, वह व्यक्ति अपने भावी जीवन में सच्चा ईश्वरोपासक, समाजसेवी, देशभक्त व विश्व के कल्याण की भावना से युक्त हो सकता है। ऋषि दयानन्द के शिष्य स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन भी वेद व धर्म संस्कृति की शिक्षाओं के कारण ही महान जीवन बना और इन्होंने ऐसे कार्य किये जो सभी का मार्ग दर्शन करते हैं।

हमें लगता है कि देश के सभी नागरिक वैदिक शिक्षा सहित आधुनिक ज्ञान विज्ञान की शिक्षा से भी अलंकृत होने चाहिये। वेदों के संगठन सूत्र से प्रेरणा लेकर देश के सभी नागरिकोंको समान विचार व समान हृदय सहित समान मन, बुद्धि व अन्तःकरण वाला होना चाहिये। यदि ऐसा नहीं होगा तो देश वर्तमान की तरह कमजोर होगा। छोटी से छोटी समस्या का समाधान भी देश के लोग नहीं निकाल पायेंगे जैसा कि स्वतन्त्र भारत में अयोध्या विवाद का हल न निकाल पाना। आईये, नैतिक शिक्षा व गुणों को प्राप्त करने के लिए वेद एवं वैदिक साहित्य के अध्ययन की शरण लें और देश को समस्याओं से मुक्त एक मन, हृदय, विचार, भावना, ज्ञान, सुख-दुख वाला आदर्श देश बनायें।

पता : १९६, चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१

आध्यात्मिक

दिव्य गुणों से शरीर, मन व बुद्धि स्वस्थ होते हैं

- डॉ. अशोक आर्य

मानव की रक्षा उसके अन्दर के दिव्य गुणों से होती है। दिव्य गुण उस व्यक्ति को ही प्राप्त होते हैं, जो व्यक्ति श्रम करता हो तथा संयम पूर्वक रहता हो। इन दिव्य गुणों से ही मानव का शरीर, उसका मन तथा उसकी बुद्धि को स्वास्थ्य लाभ मिलत है। इस बात को यह मन्त्र इस प्रकार व्यक्त करता है -

ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वेवास आ गत।
दाश्वांसोदाशुषः ॥(ऋग्वेद. १.३.७)

गत मन्त्र में सात्विक भोजन से जीवन को सात्विनक बनाने का उपदेश किया गया था। इस बात को ही आगे बढ़ाते हुए इस मन्त्र में दो बातों को समझाया गया है :-

१. दिव्यगुणों की प्राप्ति :- अपने को सात्विक भोजन के द्वारा सात्विक बनाकर जीव परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हुए सर्वप्रथम यह कहता है कि हे दिव्यगुणों ! तुम मुझे प्राप्त होवो, मुझे मिलो, मैं तुम का अधिकारी बनुं। अर्थात् इस संसार में जितने भी दिव्य गुणों का भण्डार है, वह सब गुण मैं प्राप्त करके इन दिव्य गुणों का भण्डारी बनूं। यह दिव्य गुण केवल और केवल सात्विक व्यक्ति को ही, सात्विक जीव को ही मिलते हैं। मैने सदा सात्विक भोजन किया है। मैंने सदा सात्विक अन्न को ही ग्रहण किया है। इसलिए मेरे अन्दर दिव्य गुणों को पाने की योग्यता आ गई है, इसलिए मैने इन्हें प्राप्त करने का, इन्हें प्रभु से मांगने का अधिकार भी प्राप्त कर लिया है। तब ही तो मैं प्रार्थना करते हुए कह रहा हूं कि हे प्रभु ! जितने प्रकार के भी दिव्य गुण हैं, वह सब मुझे प्राप्त करावो।

प्रश्न उठता है कि दिव्य गुण किसे कहते हैं ? दिव्य का अभिप्राय है किसी देवता के द्वारा दिए जाने वाले तथा गुण का अर्थ है अच्छाई। देवता से अभिप्राय हैजो देने का कार्य करता है। हम परमात्मा को तो देवता कहते ही हैं क्योंकि वह परमात्मा हमें सदा ही कुछ न कुछ देता ही रहता है। इस प्रकार अन्य भी बहुत से तत्व हैं, जो हमें कुछ न कुछ देते ही रहते हैं यथा वायु व जल हमें जीवन देते हैं, वह भी देवता है। माता, पिता व गुरुजन हमें ज्ञान देते हैं, वह भी हमारे लिए देवता हैं। अन्य भी जहां से हमें कुछ मिलता है, उन साधनों को हम देवता ही कह सकते हैं।

ये दिव्य गुण हमारे जीवन में क्या करते हैं ? इनसे हमें क्या लाभ होता है ? इनका हमारे जीवन में क्या प्रयोजन है ? यह भी हमें जानने का मार्ग यह मन्त्र बता रहा है। मन्त्र कह रहा है कि यह दिव्य गुण हमारा रक्षण करने का कार्य करत हैं अर्थात् यह दिव्य गुण हमारी रक्षा करते हैं।

प्रश्न फिर उठता है कि यह गुण हमारी रक्षा कैसे करते हैं ? हम जानते हैं कि दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए हमें संघर्ष करना पड़ता है, मेहनत करनी होती है, तप करना होता है, यहां तक कि मुंह तक के स्वाद को छोड़कर सात्विक भोजन पर निर्भर होना पड़ता है, रुखा सूखा खाना पड़ता है। इस सब से एक बात तो स्पष्ट है कि जिन गुणों को पाने के लिए हम इतना संघर्ष करते हैं, यदि उन गुणों का हमारे जीवन में कुछ उपयोग ही न हो तो उन्हें पाने के लिए हम इतना संघर्ष क्यों करें ? इतना समय क्यों लगायें ? इतनी शक्ति व्यर्थ में क्यों नष्ट करें ?

यह सब जानने के लिए हमें दिव्य गुणों की उपयोगिता को जानना होगा। दिव्य गुणों की ही सबसे उत्तम व सबसे प्रमुख उपयोगिता यह है कि वह गुण हमारी रक्षा करने वाले होते हैं तथा हमारी रक्षा का कार्य करते हैं। इन दिव्य गुणों से ही हमारा शरीर रोगों से बचा रहता है। शरीर में किसी प्रकार का भी रोग प्रवेश नहीं कर पाता। हम सदा निरोग रहते हैं, स्वस्थ रहते है। यह दिव्य गुण ही हैं जिनके कारण हमारे मन की सब मलिनताएँ धुल कर नष्ट हो जाती

है। मन के सब कलुष दूर हो जाते हैं। मन में किसी भी प्रकार की मैल नहीं रहती।

इन दिव्य गुणों का तीसरा तथा सबसे प्रमुख कार्य है कि जिसके पास यह दिव्य गुण होते हैं, उसकी बुद्धि में किसी प्रकार की मन्दता नहीं आती, किसी प्रकार की मलिनता नहीं आती। मन्द बुद्धि व्यक्ति समाज के साथ नहीं चल पाता। मन्द बुद्धि व्यक्ति समाज से बहुत पीछे रह जाता है, उसकी अपनी इच्छाएँ क्या हैं, इसका भी उसे ठीक से ज्ञान नहीं होता। इस कारण कोई भी व्यक्ति मन्द बुद्धि नहीं होना चाहता। स्कूल की कक्षा में ही जो बालक मन्द बुद्धि होता है, उसका सब बालक उपहास उड़ाते हैं, उसकी खिल्ली उड़ाते हैं। कोई नहीं चाहता कि उसकी कभी खिल्ली उड़े। इससे बचने का एकमात्र साधन है दिव्य गुणों की प्राप्ति। जिसके पास दिव्य गुणों का भण्डार होता है, उसकी बुद्धि बड़ी तेजी से चलती है। वह बड़ी से बड़ी समस्या को मिन्टों में हल करने की क्षमता रखता है। वह विकट स्थिति में भी अपने धैर्य को नहीं छोड़ता। इस प्रकार दिव्य गुणों के स्वामी की बुद्धि तीव्रतम हो जाती है।

यह दिव्य गुण मनुष्य को धारण करते हैं, आगे ले जाते हैं, उनकी उन्नति का कारण बनते हैं। जो व्यक्ति कृषि करते हैं, जो व्यक्ति मेहनत व मजदूरी करते हैं, श्रम करते हैं, ऐसा करने वालों की यह दिव्य गुण रक्षा करने का कार्य करते हैं। दिव्य गुण का भाव ही वास्तव में श्रम से होता है। जो व्यक्ति सदा श्रम करता है, मेहनत करता है, परिश्रम करता है, वह ही इन दिव्य गुणों को पाता है, जो आलसी बनकर पड़ा रहता है, वह इन गुणों को कैसे पा सकता है ? अर्थात् नहीं पा सकता। यह भी कहा जाता है कि आलसी व्यक्ति दुर्गुणों का स्वामी होता है तो पुरुषार्थी व्यक्ति सद्गुणों की खान होता है। आलसी को कहीं भी कोई सम्मान नहीं मिलता जबकि सद्गुणों से युक्त व्यक्ति का, दिव्य गुणों से युक्त व्यक्ति का सर्वत्र सम्मान होता है, दूर दूर तक उसका यश लोग उसका सान्निध्य पाने के अभिलाषी होते हैं।

२. दानशील बनें :- इस मन्त्र में दूसरा उपदेश देते हुए बताया गया है कि हे विश्व देवो ! हे प्रभु ! आप हमें सब कुछ देने वाले हो। आपकी ही कृपा से हमें सब कुछ मिलता है। यदि आप का वर्द-हस्त हमारे ऊपर न हो तो हमें कुछ भी नहीं मिल सकता। भाव यह है कि जब एक व्यक्ति दानशील होता है, दाता होता है, देवता का कार्य करता है, तो वह व्यसनों में रम ही नहीं सकता। भाव यह है कि दाता, दान देने वाला, अपने अतिरिक्त धन को, अपनी अतिरिक्त वस्तुओं को दान कर के दूसरे लोग, जो साधनहीन होते हैं, उनका सहयोग कर उनकी आवश्यकताएँ पूरा करने का यत्न करता है। जब वह अपने अतिरिक्त धन को दूसरों की सहायता में लगा देता है, तो उसके पास इतना धन शेष रहता है ही नहीं कि वह अपने जीवन को व्यसनों में धकेल सके। उसके पास इतना समय भी नहीं होता कि वह व्यसनों में उलझ कर अपने समय को नष्ट करें। यदि वह इन बुराईयों में लगता है तो वह दान नहीं कर सकता और यदि इन व्यसनों से बचता है तो दाता बन जाता है। दाता के रुप में उसका यश, कीर्ति दूर दूर तक चली जाती है। लोग उसकी शरण में आने लगते हैं।

अतः मन्त्र कह रहा है कि हे प्रभु ! आप सब कुछ देने वाले हो। आप देने वाले स्वभाव के, दाता स्वभाव के हो। जब एक व्यक्ति दाता बन कर अपने अन्दर के दोषों को धो देता है तो वह दान वृत्ति वाला होने से लोभी नहीं रह सकता क्योंकि लोभी तो कभी दाता बन ही नहीं सकता, कोई दान का कार्य कर ही नहीं सकता। अतः दाता कभी लोभी नहीं होता। लोभ की उसकी वृत्तियों में नाश होने से वह सब प्रकार के व्यसनों से ऊपर उठ जाता है, उसमें किसी प्रकार के व्यसन के लिए कोई स्थान ही नहीं रहता। व्यसनों से ऊपर उठने के कारण, दाता बनने के कारण, वह अपने शरीर में शक्ति एकत्र करने में, सोम रक्षण करने में सक्षम हो जाता है तथा भरपूर मात्रा में सोम की रक्षा कर लेता है, सोम एकत्र कर लेता है। यह ही उसके जीवन का यज्ञ होता है। जो इस प्रकार का यज्ञ करता है, उसके यज्ञ में सब प्रकार के दाता, सब प्रकार के दानी, सब प्रकार के देव भाग लेते हैं, उपस्थित होते हैं। इस सब का भाव यह है कि जब मनुष्य अपने शरीर में सोम की रक्षा कर लेता है तो उसके जीवन में दिव्य गुणों का विकास होता है तथा वह धीरे धीरे इन दिव्य गुणों का स्वामी बन जाता है।

पता : १०४, क्षिप्रा अपार्टमेन्ट,
कौशाम्बी-२०१०१० गाजियाबाद

प्रत्यावर्त्तन

कैसा हो हमारा नया साल

- विनोद बंसल

इकतीस दिसम्बर के नजदीक आते ही जगह-जगह जश्न मनाने की तैयारी प्रारम्भ हो जाती हैं। होटल, रेस्तरों, पब इत्यादि अपने-अपने ढंग से इसके आगमन की तैयारियां करने लगते हैं। हैप्पी न्यू ईयर के बैनर, होर्डिंग, पोस्टर व कार्डों के साथ दारू की दुकानें की भी चांदी कटने लगती है। कहीं कहीं तो जाम से जाम इतने टकराते हैं कि घटनाएँ दुर्घटनाओं में बदल जाती है और मनुष्य मनुष्यों से तथा गाड़ियां गाड़ियों से भिड़ने लगते हैं। रात-रात भर जागकर नया साल मनाने से ऐसा प्रतीत होता है मानो सारी खुशियां एक साथ आज ही मिल जायेंगी। हम भारतीय भी पश्चिमी अंधानुकरण में इतने सराबोर हो जाते हैं कि उचित अनुचित का बोध त्याग अपनी सभी सांस्कृति मर्यादों को तिलांजलि दे बैठते हैं। पता ही नहीं लगता कि कौन अपना है और कौन पराया ?

एक जनवरी से प्रारम्भ होने वाली काल गणना को हम ईस्वी सन् के नाम से जानते हैं जिसका सम्बन्ध ईसाई जगत् व ईसा मसीह से है। इसे रोम के सम्राट जूलियस सीज द्वारा ईसा के जन्म के तीन वर्ष बाद प्रचलन में लाया गया। भारत में ईस्वी सम्वत् का प्रचलन अंग्रेजी शासकों ने १७५२ में किया। अधिकांश राष्ट्रों के ईसाई होने और अंग्रेजों के विश्वव्यापी प्रभुत्व के कारण ही इसे विश्व के अनेक देशों ने अपनाया। १७५२ से पहले ईस्वी सन् २५ मार्च से शुरु होता था किन्तु १८वीं सदी से इसकी शुरुआत एक जनवरी से होने लगी। ईस्वी कलेण्डर के महीनों के नाम में प्रथम छः माह यानि जनवरी से जून रोमन देवताओं (जोनस, मार्स व मया इत्यादि) के नाम पर हैं। जुलाई और अगस्त रोम के सम्राट जूलियस सीजर तथा उनके पौत्र अगस्टम के नाम पर तथा सितम्बर से दिसम्बर तक रोम संवत् के मासों के आधार पर रखे गये। जुलाई और अघस्त क्योंकि सम्राटों के नाम पर थे इसलिए दोनों ही इकतीन दिनों के माने गये अन्यथा कोई भी दो मास ३१ दिनों या लगातार बराबर दिनों की संख्या वाले नहीं है।

ईसा से ७५३ वर्ष पहले रोम नगर की स्थापना के समय रोमन संवत् प्रारम्भ हुआ जिसके मात्र दस माह व ३०४ दिन होते थे। इसके ३३ साल बाद वहां के सम्राट नूमा पाम्पीसियस ने जनवरी और फरवरी दो माह और जोड़कर इसे ३५५ दिनों का बना दिया। ईसा के जन्म से ४६ वर्ष पहले जूलियस सीजर ने इसे ३६५ दिन का बना दिया। सन् १५८२ ई. में पोप ग्रेगरी ने आदेश जारी किया कि इस मास के ०४ अक्टूबर को इस वर्ष का १४ अक्टूबर समझा जाये। आखिर क्या आधार है इस काल गणना क्या ? यह तो यहां व नक्षत्रों की स्थिति पर आधारित होनी चाहिए।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नवम्बर १९५२ में वैज्ञानिक और औद्योगिक परिषद के द्वारा पंचाज सुधार समिति की स्थापना की गयी। समिति ने १९५५ में सौंपी अपनी रिपोर्ट में विक्रमी संवत को भी स्वीकार करने की सिफारिश की थी। किन्तु, तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के आग्रह पर ग्रेगेरियन कलेण्डर को ही सरकारी कामकाज हेतु उपयुक्त मानकर २२ मार्च १९५७ को इस राष्ट्रीय कलेण्डर के रूप में स्वीकार कर लिया गया।

ग्रेगेरियन कलेण्डर की काल गणना मात्र दो हजार वर्षों के अति अल्प समय को दर्शाती है। जबकि यूनान की काल गणना ३५८१ वर्ष, रोम की वर्ष यहूदी, मिस्र की, पारसी तथा चीन की वर्ष पुरानी है। इन सबसे अलग यदि भारतीय काल गणना की बात करें तो हमारे ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी की आयु एक अरब ९७ करोड़, ३९ लाख, ४९ हजार वर्ष है। जिसके व्यापक प्रमाण हमारे पास उपलब्ध है। हमारे प्राचीन ग्रंथों में एक-एक पल की गणना की गयी है।

जिस प्रकार ईस्वी सम्वत् का सम्बन्ध ईसा जगत

से है उसी प्रकार हिजरी सम्वत् का सम्बन्ध मुस्लिम जगत और हजरत मुहम्मद साहब से है। किन्तु विक्रमी सम्वत् का सम्बन्ध किसी भी धर्म से न हो कर सारे विश्व की प्रकृति, खगोल सिद्धांत व ब्रह्माण्ड के ग्रहों व नक्षत्रों से हैं। इसलिए भारतीय काल गणना पंथ निरपेक्ष होने के साथ सृष्टि की रचना व राष्ट्र की गौरवशाली परम्पराओं को दर्शाती है। इतना ही नही, ब्रह्माण्ड के सबसे पुरातन ग्रंथ वेदों में भी इसका वर्णन है। नवसंवत् यानि संवत्सरों से दिया गया है। विश्व में सौर मण्डल के ग्रहों व नक्षत्रों की चाल व निरन्तर बदलती उनकी स्थिति पर ही हमारे दिन, महीने, साल और अनेक सूक्ष्मतम भाग आधारित होते हैं।

इसी वैज्ञानिक आधार के कारण ही पाश्चात्य देशों के अंधानुकरण के बावजूद चाहे बच्चे के गर्भाधान की बात हो, जन्म की बात हो, नामकरण की बात हो, गृह प्रवेश या व्यापार प्रारम्भ करने की बात हो, सभी में हम एक कुशल पंडित के पास जाकर शुभ लग्न व मुहूर्त पूछते हैं। और तो और देश के बड़े से बड़े राजनेता भी सत्तासीन होने के लिए सबसे पहले एक अच्छे मुहूर्त का इंतजार करते हैं जो कि विशुद्ध रूप से विक्रमी संवत् के पंचाग पर आधारित होता है। भारतीय समयानुसार कोई भी काम यदि शुभ मुहूर्त में प्रारम्भ किया जाये तो उसकी सफलता में चार चांद लग जाते हैं। वैसे भी भारतीय संस्कृति श्रेष्ठता की उपासक है। जो प्रसंग समाज में हर्ष व उल्लास जगाते हुए एख सही दिशा प्रदान करते हैं उन सभी को हम उत्सव के रूप में मनाते हैं। राष्ट्र के स्वाभिमान व देशप्रेम को जगाने वाले अनेक प्रसंग चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से जुड़े हुए हैं। यह वह दिन है जिस दिन से भारतीय नववर्ष प्रारम्भ होता है। आइये इस दिन की महानता के प्रसंगों को देखते हैं-

ऐतिहास महत्व :–

१. आज से एक अरब ९७ करोड़, ३९ लाख ४९ हजार वर्ष पूर्व इसी दिन के सूर्योदय से ब्रह्मा जी ने जगत की रचना प्रारंभ की।
२. प्रभु श्रीराम चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य व धर्म राज युधिष्ठिर का राज्याभिषेक भी इसी दिन हुआ था।
३. शक्ति और भक्ति के नौ दिन अर्थात् नवरात्र स्थापना का पहला दिन यही है।
४. प्रभु-राम के जन्म दिन रामनवमी से पूर्व नौ दिन का श्रीराम महोत्सव मनाने का प्रथम दिन।
५. आर्यसमाज स्थापना दिवस, सिख परम्परा के द्वितीय गुरु अंगददेव जी, संत झूलेलाल व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशव राम बलीराम हैडगेवार का जन्म दिवस।

प्राकृतिक महत्व –

१. बसंत ऋतु का आरंभ वर्ष प्रतिपदा से ही होता है जो उल्लास, उमंग, खुशी तथा चारों तरफ पुष्पों की सुगंधि से भरी होती है।
२. फसल पकने का प्रारंभ यानि किसान की मेहनत का फल मिलने का भी यही समय होता है।
३. ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस दिन नक्षत्र शुभ स्थिति में होते हैं अर्थात् किसी भी कार्य को प्रारंभ करने के लिये शुभ मुहूर्त होता है।

क्या एक जनवरी के साथ ऐसा एक भी प्रसंग जुड़ा है जिससे राष्ट्र प्रेम जाग सके, स्वाभिमान जाग सके या श्रेष्ठ होने का भाव जाग उठ सके ? आइये ! विदेशी को फैंक स्वदेशी अपनाएं और गर्व के साथ भारतीय नववर्ष यानि विक्रमी संवत् को ही मनायें तथा इसका अधिक से अधिक प्रचार करें।

पता : ३२९, द्वितीय तल, संत नगर, ईस्ट ऑफ कैलाश नई दिल्ली

वैचारिक किशोरवय की कुंठा एवं समस्या

स्व. गीताचन्द, शिक्षिका, डी.ए.वी. नन्दिनी

***क्यों** होता है ऐसा कि आपका युवा होता बेटा देर रात शराब के नशे में घर आता है ? आपकी बेटी ऊटपटांग पोशाकें पहनती है और टोकने पर आपको दकियानूस सिद्ध करना चाहती है? क्यों होता है ऐसा कि आपका जो बच्चा बचपन में हर सबजेक्ट में एक्सीलेंट था, दिनो दिन पढ़ाई से जी चुराता जा रहा है और आप हमेशा या तो बच्चों को डपटते हैं या अपनी किस्मत को कोसते हैं। कभी आपने सोचा है वो क्यों आपको और इस समाज को ठेंगे पर रखने की खता कर रहे हैं। वो क्यों हर उस नियम को तोड़ने में आनंदित होते हैं, जो आपने या समाज ने उनके लिए रचे हैं।*

असल में बच्चों का व्यवहार उसके बचपन की घटनाओं और संवेदनाओं के सापेक्ष होता है। आपने कैसे उसके बचपन को संवारा है। एक संवेदनशील माँ-बाप के जैसा उसके मानसिक स्तर पर जुड़कर या अपने बचपन से अनुभव लेकर। उसको अपना निजी सम्पत्ति समझकर अधिकारपूर्वक या बाल मनोभावों के अनुकूल। हमने अक्सर देखा है, बच्चों को दो तरह की परवरिश में या तो उन्हें हद से ज्यादा स्वतंत्र कर दिया जाता है या हद से ज्यादा शोषित किया जाता है। ताज्जुब तो तब होता है जब ऐसा पढ़े-लिखे लोग भी करते हैं। बच्चों के समग्र विकास के लिए दोनों ही स्थितियाँ भयावह है। हमारे यहां वैसे भी प्राचीन अवधारणा है कि एक से पांच वर्षों तक बच्चों को भरपूर दुलार और उचित पालन-पोषण करें। दस से पंद्रह वर्षों तक उनको अपना बैरी माने तथा पंद्रह के बाद उनसे मित्रवत व्यवहार करें। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जाता है पिता का जूता जब पुत्र के पैरों में आ जाए तब पिता को पुत्र के साथ दोस्ताना व्यवहार करना चाहिए।

हमेशा से ये होता कि जब एक युग बहुत-बहुत विकास कर लेता है तो उस युग के रीति-रिवाज, संस्कार, साहित्य-इतिहास, राजनीति, भाषा, छंद सब कुछ एक रूढ़ि में जकड़ जाती है। विकास के चरम पर पहुंच कर सीमाओं में घिर जाती है पर चूंकि जीवन तो निर्बाध बहाव है अतः उन सीमाओं और बन्धनों से पुनः रिस-रिस कर आगे बढ़ता जाता है एक ओर उद्दाम ऊँचाई की लालसा लिए। वहीं जहां एक युग रूढ़ होता है और दूसरा युग आरम्भ होता है उसे सन्धिकाल कहते हैं। संधि काल तमाम उथल-पुथल, उद्विम्बनता, बेतरतीनियां समेटे हुए आता है। क्योंकि उस नव पल्लवन में अनगढ़ता होती है, अनुभव हीनता होती है अतः खुद सीखना होता है, गिरना और उठना होता है, इसलिए बिखराव दिखता है। हमें सीखने के लिए हमारे पूर्वजों ने बहुत कुछ छोड़ रखा है, जो समय-समय पर हमारा मार्गदर्शन करती है। हम अपने इतिहास से सबक लेकर राजनीति के पथ पर चल सकते हैं। धर्म ग्रंथ हमें मर्यादा की सीमा पहचानता बताते हैं, साहित्य से सबके लेकर समाज का पुरुत्थान कर सकते हैं। पर हमेशा होता ये है कि नव विकास के जोश में हम खुद ही डगमग कर चलना चाहते हैं, बिना किसी सहारे के अपनी गलतियों द्वारा सीखते हुए। ये ठीक है कि अनुभव जन्य ज्ञान हमेशा के लिए हमारे मस्तिष्क में जज्ब हो जाता है। लेकिन उस ज्ञान के लिए हम एक गलती कर चके होते हैं। अगर हम हमारे बड़ों की गलतियों को देखे और उनसे बचते हुए चले तो ज्ञान भी प्राप्त होगाा और हम गलती भी नहीं करेंगे।

संधि काल की आज हर क्षेत्र में बदलाव की अंगड़ाई ले रहा है। राजनीति में स्वतन्त्रात्मक पार्टियाँ समाप्त हो रही है और मिली-जुली सरकारें बन और चल रही हैं। यह तब तक होता रहेगा जब तक पुनः किन्ही दो शक्तिशाली पार्टियों का उदय न हो या होगा ये कि सभी छोटी क्षेत्रीय पार्टियां दो भागों में विभाजित हो दो शीर्ष पार्टियों के साथ एकरुप हो जाएगी।

दूसरी तरफ संक्रमण है साहित्य और विज्ञान में।

साहित्य में जहां प्रिंट मीडिया का महत्व कम नहीं तो उसका प्रसार जरुर कम हुआ है। साहित्य में रूचि रखने वाले लोग कम होते जा रहे हैं। सबको इतनी आपाधामी है कि समय नहीं है किताबों को पटलने और पढ़ने का। थोड़ा सा वक्त मिला तो रिमोट उठाओ और मनपसंद चैनल देख लो। यही हाल बच्चों एवं युवाओं का भी है। टी.वी. संस्कृति उनके सर चढ़ कर बोल रही है। आजकल बच्चे जहां मारधाड़ एवं हवा में कलाबाजियां करने वाले कार्टून देखकर रोमांचित होते हैं, वहीं पुरानी हिन्दी फिल्मों के फूहड़ ढंग से फिल्माए गए पॉप रीमिक्स गीत युवाओं के भटकन भी राह पर धकेल रही है। औरतें पारिवारिक धारावाहिकों के नाम पर स्त्रीत्व का पदमर्दन आत्मसात कर रही है।

हर संक्रमण काल की ही तरह उम्र का संधिकाल है कौशोर्य। यहां बचपन विदा ले रहा है होता है और युवावस्था दस्तक दे रहा होता है। बच्चे अब अपने आपको बच्चा समझ कर नियंत्रित करवाना पसंद नहीं करते। आजकल टी.वी. विडियो के प्रबल प्रभाव के कारण बच्चे दस वर्ष के बाद से ही व्यस्कों जैसा बर्ताव करने लगे है, उनके भीतर किशोरावस्था के लक्षण पनपने लगे हैं। पर अभिभावक तो उन्हें अब भी बच्चा ही समझते हैं। यहीं से शुरु होता है कुंठा के बीज का अंकुरण। अभिभावक होने के नाते हमें पता होता है कि किशोरावस्था में बच्चों के साथ कैसा व्यवहार किया जाए पर उनकी उटपटांग हरकतें हमें असहिष्णु बना देती है। हमारे उग्र प्रतिक्रिया के पीछे बच्चों के भविष्य की चिंता होती है, पर वे इसे अपना दमन समझने लगते हैं। वयः संधि होती ही है ऐसी, जहां आकर माँ-बाप का समझना अनर्गल उपदेश लगने लगता है, माँ-बाप अपने दुश्मन सरीखे लगते हैं। बच्चे घर से बाहर रहने की कोशिश करने लगते हैं। दोस्त-मित्रों पर ज्यादा भरोसा करने लगते हैं। पर उन्हें हमेशा यह ध्यान रखना होगा कि जीवन में कई बार ऐसे क्षण आते हैं जब हम किसी एक पर सबसे ज्यादा विश्वास कर रहे होते हैं और उसी क्षण हम स्वयं के प्रति सबसे ज्यादा अविश्वास कर रहे होते हैं। एक और बात जो सभी को भली-भांति समझ लेनी चाहिए कि हर व्यक्ति एक अद्वितीय ईकाई है और हर व्यक्ति अपने जीवन का अन्तिम दर्शन अपने जीवन से ही पताता है, किसी के सीख से नहीं।

किशोरों को यह समझ लेना होगा कि तुम्हारी ये अवस्था, ये संक्रमण, तुम्हारे पुरातन को तुमसे दूर ले जाएगा और तुम्हारे एक सर्वथा नवल एवं विलक्षण जीवन का आगाज करेगा जिसके रचनाकार तुम स्वयं होगे। हो सकता है कि तुम्हारे इस सृजन में तुम्हारे द्वारा निर्मित, तुम्हारे उदात्त व्यक्तित्व में तुम्हें कांटों भरी राह पर भी चलना हो, ये तो तुम्हारी नियति तय करेगी, पर इतना जान लेना कि हर सृजन, पेनकुल होता है। यह वह समय है जो सुमार्ग पर पग धरे तो संभावनाओं से भरा आकाश मिलता है और कुमार्ग अपना ले तो विध्वंसात्मकता जन्म लेती है। किशोरावस्था हमेशा द्विविधा ग्रस्त हुआ करती है। कहीं तो आपको अकेले में भी भीड़ का अहसास होता है और कभी भरी भीड़ में अकेलापन खाने लगता है। यहाँ आकर अचानक बचपन की उन्मुकतता, स्वंछदता सब एक बोझ तले दबती नजर आती है। कई तह की कुंठाए जन्म लेने लगती है। बच्चा कभी तो माँ-बाप के मानको पर खरा उतरने प्रतिबद्ध दिखता है, और कभी सब कुछ पर ठोकर मारने की परिकल्पना जन्म लेने लगती है। कभी कैरियर और सपनों में साम्य नहीं बैठा पाता तो कभी दोस्ती और प्यार के अन्तर को नाप नहीं पाता। फलतः वह अपने संशय की डोर में अपने आपको उलझा हुआ पाता है। कोई अपना नहीं और कभी सब अपने-अपने से लगते हैं। इस मोड़ पर आकर दिग्भ्रमित सा वह ठिठक जाता है।

ऐसे में माँ-बाप ही उसके सबसे बड़े हितैषी और संबल बन सकते हैं, अगर कोशिश करे। कितनी सारी सामग्री कितने सारे उपयोगी तथ्य तमाम साहित्य में बिखरे पड़े हैं, किशोर मनोभावों को समझने-समझाने एवं उनके मार्गदर्शन के लिए। अतः माता-पिता स्वयं इतना समय निकाले कि स्वयं सीखे और अपने बच्चों को सही दिशा दे। चाहे तो नियमित मनोचिकित्सक से परामर्श भी ले सकते है। अपने किशोर वय बच्चों को संवारने में आपकी रचनात्मकता काम आ सकती है। आखिरकार बच्चे ही हमारी असली सम्पत्ति होते हैं। आप स्वयं अपने द्वारा निर्मित तस्वीर में सुंदर रंग-संयोजन करिए। फिर देखिए आपके युवा होते बेटे या बेटी को देखकर कौन नहीं कह उठता - वाह !

पता - डी.ए.वी. इस्पात पब्लिक स्कूल, नन्दिनी भिलाई

पर्व प्रेरणा

अनेक पर्वों का पुञ्ज : मकर संक्रांति पर्व

ले. मनुदेव 'अभय', विद्यावाचस्पति

वैदिक ऋषिगण परमात्मा की इस सृष्टि के द्यौः लोक अंतरिक्ष तथा इस पृथिवी लोक के रहस्यों को जानने का सदैव प्रयत्न करते थे। संध्या (ब्रह्म यज्ञ) के प्रसंग में अघमर्षण मंत्राः के अन्तर्गत ऋग्वेद १०/१९०/१-३ द्वारा सृष्टि उत्पत्ति का क्रमिक विकास इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं कि यह सृष्टि उद्देश्यपूर्ण है। कारण से कार्य होता है, अभाव से भाव की उत्पत्ति नहीं होती। प्रलय के पूर्व सृष्टि में विद्यमान जीवों को उनके कर्मों का फल देने के लिए तथा अन्य जीवों को मोक्षानन्द का अवसर देने, प्रेरणा देने आदि हेतुओं के कारण सृष्टि की उत्पत्ति हुई।

२१वीं शताब्दी के विश्व के अनेक महान व्यक्ति 'वेद' को सर्वोच्च ज्ञान का पुस्तक स्वीकार कर विश्व के ग्रंथालय में शीर्षक्रम पर रखकर सम्मानित किया है। इससे मत-मतान्तर, पंथ, मजहब तथा समुदायों की कथित पुस्तकें स्वतः गौण स्थान पर आ गई। अब न तो चौथे दिन सूर्योदय हुआ और न पृथ्वी चटाई की तरह चपटी रह गई है अपितु भौतिक विज्ञान की नवीनतम खोजों और धारणाओं ने ऐसी कल्पित मान्यताओं पर पूरी तरह पानी फेर दिया है।

इस सन्दर्भ में इतना ही कथन पर्याप्त है कि हम आर्यों ने सदैव प्रकृति से बड़ा प्रेम किया है तथा अन्तरिक्ष के साथ द्यौ लोक एवम् पृथ्वी पर शांति की प्रार्थना की है। प्रकृति के परिवर्तन से अपना पारिवारिक तथा सामाजिक जीवन व्यवस्था में भी समयानुसार बदलाव किया है। मकर-संक्राति पर्व पर भी एक विशिष्ट परिवर्तन होता है। यद्यपि यह पर्व 'सविता' या सूर्य से संबंधित है। तद्नुसार आर्यों ने इसे एक पर्व के रूप में स्वीकार कर प्रकृति-प्रेम को प्रकट किया है।

मकर संक्रांति पर्व क्यों और कैसे ?

वेद और वर्त्तमान विज्ञान के अनुसार पृथवी सूर्य का चक्कर लगाते हुए २३.०५ पर झुकी रहते हुए अपने केन्द्र पर ही घूमती रहती है। अंतरिक्ष में जितने भी ग्रह-उपग्रह आदि हैं, वे सभी सूर्य से प्रकाशित है। चन्द्रमा एवं सूर्य से प्रकाश ग्रहण करता है। खगोलशास्त्र के ज्योतिषियोंके अनुसार क्रांतिवृत्त के १२ नाम कल्पित किये गये हैं। उन १२ भागों पर विभिन्न आकृति वाले पदार्थों के नाम रखे गये हैं। जैसे मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन। यही १२ राशियाँ हैं।

अयन अनुभाग : अक्षांश-देशान्तर रेखायें (कल्पित)

इसी प्रकार सम्पूर्ण पृथ्वी के गोलाकार भाग में पूर्व से पश्चिम ३ रेखायें भी कल्पित खींची गई है। पृथ्वी के बिलकुल बीचोंबीच में पूर्व से पश्चिम भू-मध्य रेखा (विषुवत रेखा) २३.१०.२, उत्तर में कर्क रेखा तथा दक्षिण में २३.१०.२४ पर मकर रेखा। इन्हें 'अयन' भी कहते हैं। जब सूर्य मकर रेखा को स्पर्श कर वापस लौटता है, तब प्रत्येक वर्ष की १४ जनवरी को मकर संक्रांति मनाई जाती है। तभी से दिन शनैः शनैः बड़े और रात छोटी होने लगती है। यह सब चेतन शक्ति द्वारा नियंत्रित है।

२२ दिसम्बर को सबसे छोटा दिन

प्राचीन काल से काल गणना के अनुसार सौर मंडल का मुखिया सूर्य प्रति वर्ष २२ दिसंबर को अधिकतम बिन्दु पर पहुंचकर मकर रेखा को स्पर्श करता है और विषुवत रेखा से २२ डिग्री २६ मिनट दक्षिण में रहकर फिर शनैः शनैः सूर्य उत्तर दिशा की ओर बढ़ने लगता है। इस प्रकार वर्ष में एक दिन २२ दिसंबर को छोटा दिन तथा राथ बड़ी होने की घटना को खगोल विज्ञान में विन्टरखोलस्टिक और ज्योतिष विज्ञान में मकर सायन कहा जाता है। यह सब परिवर्तन प्रकृति में व्याप्त तथा उस पर नियंत्रण करने वाली एक अदृश्य शक्ति द्वारा होता रहता है। ऋग्वेद के १०वें मण्डल के अन्तर्गत नासदीय सूक्तों में प्रलय, प्रकृति, सृष्टि रचना आदि का जिस प्रकार से बुद्धियुक्त वर्णन पाया जाता है, उसे पढ़कर आधुनिक वैज्ञानिक विशेष कर अमेरिका के 'नासा' के

भारत का ग्रीनविच - उज्जैन नगर
भारत का गौरव - महाकाल नगर

भारत का ग्रीनविच मध्यप्रदेश में स्थित उज्जैन नगर माना जाना चाहिए। अंग्रेज शासकों ने भारतीयों में हीन भावना उत्पन्न करने की दृष्टि से इंग्लैण्ड के लन्दन से गुजरने वाला देशान्तर रेखा को ग्रीनविच कहकर इसे विश्व प्रसिद्ध कर दिया। किन्तु अंतरिक्ष में विद्यमान अनेकोनेक ग्रहों, सूर्य, चन्द्र निहारिकाओं तथा आकाश गंगाओं के संबंध में उज्जैन स्थित शोध शाला में अनेकोनेक वैज्ञानिक शोध और मान्यताएँ स्थापित की है। इसलिए स्वतंत्र भारत में उज्जैन हमारी ग्रीनविच रेखा है। यह भारत के गौरवपूर्ण स्थान है। यह महाकाल नगर है। सं.

वैज्ञानिक आश्चर्यचकित है. आज से दो अरब पूर्व भारतीय ऋषियों ने जो चिन्तन वेद के माध्यम से विश्व के सम्मुख प्रस्तुत किया, वह प्रकृति के नियमानुसार बड़े ही रोचक-शैली में अभी भी उपलब्ध है। वेद स्वतः प्रमाण ग्रन्थ है और इनके पूर्ववर्ती ग्रन्थ परतः प्रमाण है।

सृष्टि की आत्मा सूर्य :-

चित्रन्देवानामुद्गादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुण्यस्याग्ने आ प्राद्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षम् । सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च स्वाहा ।

(यजु. ६/४२)

अर्थ -जो सब देवों में श्रेष्ठ और बलवान है, जो सूर्य लोक प्राण और अपान तथा अग्नि का भी प्रकाशक है, जो द्यौलोक, अन्तरिक्ष और पृथिवीलोक में व्यापक है, जो जड़ और चेतन जगत् का आत्मा- जीवन है, वह चराचर जगत का प्रकाशक परमात्मा हमारे हृदयों में सदा प्रकाशित रहे। *(भाष्यकार महर्षि दयानन्द सरस्वती)*

उपरोक्त मन्त्र से स्पष्ट होता है कि सृष्टि में उपलब्ध अनेक ग्रह-उपग्रहों आदि से सर्वश्रेष्ठ वह प्रकाश जो आगे ले जाने वाला होता है। यही कारण है कि मकर संक्रांति के पूर्व सम्पूर्ण देश में इस उत्सव को मनाने की विविध प्रणालियां है। इस पर्व की मान्यताएं एक हैं, लेकिन इसे मनाने के अन्दाज अलग-अलग है। पंजाबी समाज 'लोहड़ी', सिन्धी समाज 'लाललोई', तमित समाज 'पेड़ा मांड़गा', दक्षिण भारतीय 'पोंगल', उत्तर भारतीय 'खिचड़ी' पर्व तथा मराठी के ब्राह्मण समाज 'मकर संक्रांति' के रुप में मनाते हैं। यहां अति संक्षेप में इनका विवेचा इस प्रकार है :-

(१) मराठी समाज :- महाराष्ट्रियन समाज में प्रातः स्नान के बाद मिट्टी से बना छोटे-बड़े जिसे सुपणा या वाण कहा जाता है में अनाज, तिल, गुड़ का दान किया जाता है। समाज में एक सप्ताह तक हल्दी, कुमकुम मिलन समारोह मनाया जाता है। ऐसे आयोजन घर-घर में होते हैं।

(२) **पंजाबी समाज** :- पंजाबी समाज की मान्यतानुसार इस अवसर पर 'लोहड़ी' पर्व मनाया जाता है। यह नई फसल के आने का पर्व है। रात्रि में 'लोहड़ी' आग जलाकर मनाई जाती है। पिछले पूरे वर्ष में कोई हर्षोत्सव, सन्तान जन्म, नये शिशु का आगमन के उपलक्ष्य में यह 'लोहड़ी' पर्व अधिक व्यापक रुप में मनाया जाता है तथा परिजनों में मिठाई बांटी जाती है।

(३) **मलियाली समाज** :- इस समाज द्वारा 'अयम्मा' (महादेवी) **मंदिर में मक्का विलक्क** की विशेष पूजा की जाती है। महिलाएं लालपोली वेशभूषा के साथ पोंगल पर्व मनाती हैं।

(४) **सिंध समाज** :- संक्रांति के एक दिन पूर्व धान की पीड़ियों से लाललोई बनाई जाती है। खीर-गुड़, परमल का भोग अर्पित कर इसे जलाया जाता है और महिलाएं इस अग्नि की परिक्रमा लगाकर सुख-शांति तथा परिजनों की लम्बी आयु संबंधी प्रार्थना करती हैं।

(५) **उत्तर भारतीय ब्राह्मण समाज** :- संक्रांति के एक दिन पूर्व इसे मनाने की तैयारी की जाती है। इस अवसर पर दाल (अरहर, तुअर) और चावल की खिचड़ी गरीबों में दान की जाती है। महिलाएं अपने सुहाग की मंगलकामना के लिए १३ वस्तुएँ महिलाओं में बांटती है।

(६) बंगाली समाज :- इस अवसर पर बंगाली परिवारों में तिल दान तथा स्नान का बड़ा महत्व है। प्रत्येक घर में चावल से बना व्यंजन पीठा और पाटी सपता विशेष रुप से बनाया जाता है। इस दिन पतंग उड़ाने का भी अपना अलग महत्व है।

पतंगोत्सव का पर्व

इन दिनों आकाश साफ रहने के कारण देश के अनेक नगरों में पतंके उड़ाई जाती है। ये पतंगें भी भिन्न-भिन्न आकृति तथा पतंगे कागज का कलात्मक रुप से बनाकर उड़ाई जाती है। इसमें एक व्यक्ति पतंग उड़ाता है तो दूसरा उसका सहायक रंगीन मन्जा लपेटेने के लिये रहता है। इस अवसर पर पतंग प्रतियोगिताएं भी खूब होती है और तेज मन्जें में जो कि बारिक कांच में लिपटा होता है, उससे धागा काटकर पतंगे काटी जाती है। प्रतियोगिता में हार-जीत का भी बड़ा महत्व है। उत्तर प्रदेश में 'गिल्ली डंडा' भी खेला जाता है।

पक्षी हिंसा :- आकाश में पतंग प्रतियोगिता के समय तेज मन्जे से कई पक्षी इसमें फंस जाते हैं और घायल होकर नीचे गिर पड़ते हैं। कई प्रान्तों में पतंग बनाने का उद्योग बड़े पैमाने पर चलाया जाता है।

उत्तरायण की ओर प्रस्थान :- २२ दिसम्बर को इस खगोलीय घटना के अन्तर्गत दिन की अवधि लम्बी तथा रात्रियां छोटी होने लगती है। इसे ही उत्तरायण का प्रारम्भ कहा जाता है। यह ध्यान रखने योग्य सिद्धान्त है कि प्रतिवर्ष २१ मार्च से दिन व रात बराबर होते हैं तथा २१ जून तक दिन बड़े होते जायेंगे। इस प्रकार मकर संक्रांति का पर्व अपने साथ अनेक पर्व लेकर आता है।

इस पर्व का प्रमुख घटक सूर्य ही है। इसलिए भारतीय समाज में इस वृहस्पति अर्थात् गुरु पर्व कहा जाता है।

पता : सुकिरण, अ/१३, सुदामा नगर, इन्दौर - ४५२००९ (म.प्र.)

तथ्यात्मक अंग्रेज ने भारत का इतिहास कैसे बिगाड़ा

१९४७ ई. से पूर्व की बात है। श्री पं. भगवद्दत जी एक बार शिमला गये। वहां उनसे अंग्रेस सरकार का एक एजेन्ट मिला और कहा कि आप एक पुस्तक लिखें जिसमें यह सिद्ध करें कि हरियाणा व पंजाब के जाट विदेशी आक्रमणकारियों की सन्तान है। आपको इस कार्य के लिए बहुत बड़ी राशि दी जाएगी। श्री पं. जी ने कहा कि आपने एक ठीक व्यक्ति को इस कार्य के लिए में नहीं चुना मैं तो हरियाणा के जाटों, अहीरों व गूजरों को प्राचीन आर्यों की ही सन्तान मानता हूँ। मैं आपका यह कार्य करने में असमर्थ हूँ। यही कार्य करवाना है तो मेरे पास क्यों आए ? उस सरकारी दूत ने कहा, कई इतिहासकारों ने लिखा है कि अहीर जाट आदि विदेशी आक्रमणकारियों की सन्तान है। हम चाहते हैं कि आप अपने ग्रंथ में ऐसा लिखें। पं. भगवद्दत जी ने उस व्यक्ति को धिक्कारा फटकारा और धन के प्रलोभन में न आकर पुनः यही कहा कि मैं वीर जाटों, अहीरों व गुजरों को आर्यों की ही सन्तान मानता हूँ। इस घटना से स्पष्ट है कि विदेशी ईसाई सरकार भारत का इतिहास बिगाड़ने के लिए कहां तक जाने को तैयार थी। महर्षि दयानन्द का एक शिष्य तो सरकार के फन्दे में न फंसा, न जाने और कितने इतिहास लेखकों ने पैसे के लिए अपनी आत्मा को बेचा। इस घटना से यह भी पता चलता है कि यह विदेशी ईसाई सरकार आर्य जाति की भुजा हमारे क्षत्रिय वर्ग को अनार्य सिद्ध करने पर तुली हुई थी। स्मरण रहे कि मैक्स मूलर आदि पश्चिमी विद्वान् अंग्रेज सरकार के वेतनभोगी नौकर थे। उनका आत्मा स्वतन्त्र नहीं था, अतः उन्होंने जो कुछ भी लिखा सूली व साम्राज्य की वृद्धि की रक्षा के लिए लिखा। *लेखक- राजेन्द्र जिज्ञासु*

सैद्धान्तिक योग : जीवन का विज्ञान एवं दर्शन

- वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

विज्ञान एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी भी वस्तु को हस्तामलकवत् प्रत्यक्ष देखा जा सकता है, उसका विश्लेषण किया जा सकता है। योग जीवन का विज्ञान है। इतना ही नहीं, अपितु योग इससे भी आगे बढ़कर है। योग तथा विज्ञान में दो बातों का अन्तर स्पष्ट है पहला यह कि विज्ञान के निष्कर्ष सुनिश्चित होने पर भी परिवर्तनशील है। एक समय में सुप्रतिष्ठित दूसरे समय में प्रासंगिकता खो देते हैं। योग में यह त्रुटि नहीं है, योग के सिद्धान्त इसकी मान्यताएँ इसके निष्कर्ष सार्वकालिक है। जो सिद्धान्त तथा निष्कर्ष कल प्रासंगिक थे वे आज भी तथा भविष्य में भी रहेंगे जबकि विज्ञान में ऐसा नहीं है। अतः योग को जीवन का विज्ञान कहने की अपेक्षा जीवन का गणित कहना अधिक उपयुक्त होगा। गणित के सिद्धान्त सुनिश्चित होते हैं। २+२ सदा ४ ही रहेंगे इसी प्रकार योग के सिद्धान्त भी सदा एवं सर्वथा अपरिवर्तनीय है तथा रहेंगे। योग तथा विज्ञान में दूसरा भेद यह है कि विज्ञान केवल मूर्त तथा भौतिक पदार्थों का विश्लेषण करता है जबकि योग अभौतिक तथा अमूर्त पदार्थों का भी विश्लेषण करत है उनका साक्षात्कार करता है। मन यद्यपि भौतिक किन्तु अमूर्त है। मन में रहने वाले विचार, वृत्तियां, संकल्प भी अमूर्त है। योग इन सभी का विश्लेषण करता है। जबकि विज्ञान के द्वारा यह सम्भव नहीं। यद्यपि मनोविज्ञान के द्वारा मन का अध्ययन किया जाता है किन्तु यह बाह्य है। मन की गहराई, उसके निरोध तथा नियंत्रण में जिस सीमा तक योग जाता है, आधुनिक मनोविज्ञान वहां तक नहीं जाता है।

योग जीवन का विज्ञान है, इस विषय पर कुछ कहने से पूर्व हमें यह जान लेना चाहिए कि जीवन है क्या ? केवल प्राण लेने का नाम य चलते फिरते रहने का नाम जीवन नहीं है, अपितु आत्मा, मन, बुद्धि, प्राण तथा शरीर के संयोग का नाम जीवन है योग इन सभी को लेकर आगे बढ़ता है। सभी उसके विषय है। मन का पूर्ण शुद्धिकरण मन का विषय है। ऋतम्भरा प्रज्ञा की प्राप्ति इसी मार्ग पर होती है। शारीरिक स्वास्थ्य तथा नीरोगता भी योग का लक्ष्य है। इसलिए पतंजलि ने व्याधि की गणना अंतरायो में की है। प्रमुख रुप में आत्मदर्शन योग का लक्ष्य है। वृत्ति निरोध के पश्चात वह सुतरा सिद्ध है। इस प्रकार योग दर्शन सम्पूर्ण जीवन का, जीवन के पांचों भागों- आत्मा, मन, बुद्धि, प्राण तथा शरीर का विज्ञान है। इस विज्ञान की तुलना संसार का कोई भी विज्ञान नहीं कर सकता।

आज संसार भौतिक उन्नति पर टिका है और वही उसका लक्ष्य है। आज का मानव शरीर एवं इन्द्रियों की संतुष्टि में लगा है आज वह भौतिक साधनों से क्षणिक मनोतोष के साथ पर्याप्त दुख भी प्राप्त कर रहा है, तथापि वह दुख के श्रोत को सुख देने का कोई यत्न नहीं कर रहा है। कामनाओं तथा विविध इच्छाओं का जो बीच उसके मन में निहित है, वह उसे ही अंकुरित पल्लवित एवं पुष्पित कर रहा है। इसीलिए आज संसार दुःख मग्न है। भौतिक ऐश्वर्य के होने पर भी प्राणियों को शान्ति नहीं।

अपरिमित ऐश्वर्य को प्राप्त करके ऊँचे से ऊँचे पद पर प्रतिष्ठित होकर मान-सम्मान, धन-धान्य सभी से सम्पन्न होने पर भी वे दुखी हैं, त्रस्त हैं, उद्विग्न है तथा अशांत है। आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक के रुप में तीन प्रकार के दुःख दर्शनशास्त्र में माने गये हैं। कपिल मुनि इनकी निवृत्ति के लिए **'अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्ति पुरुषार्थ है'** कह रहे हैं। दुखों का यह विभाग सभी व्यक्तियों पर लागू नहीं होता। संसार में ऐसे अनेक व्यक्ति मिल जावेंगे

जो आधिभौतिक तथा आधिदैविक दुखों से ग्रस्त नहीं है, तथापि वे दुखी हैं संतप्त है, शोक ग्रस्त हैं ऐसे व्यक्ति स्वयं अनुभव करते हैं कि वे अंदर से रिक्त हैं। उनका समस्त ऐश्वर्य भी शान्ति नहीं दे रहा है। इसी कारण उनके मन में एक बैचेनी है छटपटाहट है। इस अवस्था से छुटने की। इसी का नाम आध्यात्मिक दुख है यह दुख बाह्य साधनों से सांसारिक ऐश्वर्य से दूर नहीं हो सकता। इससे छुटने का एक ही मार्ग है तथा इसी का नाम योग मार्ग है।

योग जीवन जीने का विज्ञान है। आनन्दपूर्वक जीने का दर्शन है। योग मार्ग के पथिक आध्यात्मिक दुख कष्ट नहीं देते। सभी व्यक्ति योग मार्ग के पथिक नहीं बन सकते, पतंजलि बात को जाते हैं। अत्यन्त तमोगुण प्रधान वृत्ति वाले तथा अत्यन्त रजोगुण प्रधान वृत्ति वाले व्यक्ति योग मार्ग के पथिक नहीं बन सकते। वे तो सांसारिक भोगों में ही मस्त हैं। ऐसे लोग एक साधन में सुख न देखकर दूसरे साधन को सुखमय समझकर अपनातेहैं, किन्तु वहां पर भी दुख ही प्राप्त करके पश्चाताप करते हैं व्यास जी ऐसे व्यक्तियों को **वृश्चिकविषभीतइवाशीविषेण दष्टः** कहते हैं। अर्थात जो बिच्छू के डंक से डर कर सर्प विष के द्वारा ग्रसित हो जाता है। इसका परिणाम बतलाते हुए व्यास जी कहते है - **विषयवासनानुवासिती महति दुःख पंके निमग्नः** अर्थात् विषयों का वासना से अनुप्रणित होकर ऐसा व्यक्ति महान् दुःख सागर में निमग्न हो जाता है। रजोगुण एवं तमोगुण प्रधानवृत्ति वाले व्यक्ति ही ऐसे होते हैं। वे योग मार्ग के पथिक नहीं हो सकते।

योग मार्ग के पथिक को श्रद्धालु जिज्ञासु एवं मुमुक्षु होना ही चाहिए। उसके मन में दुःखों से छूटने की कामना होनी चाहिए, तभी वह योग मार्ग पर चलेगा। संसार में तीन प्रकार के प्राणी हैं। एक वे जो सांसारिक भोगों को ही सुखदायक मानकर इनमें ही मस्त हैं। दूसरे वे जो इनमें असक्त तथा व्यस्त तो हैं किन्तु उनके मन में इन्हें छोड़ने की कामना है क्योंकि वे इनसे दुःखी हैं। तीसरे व्यक्ति वे हैं जो समस्त भोगों को दुःखपूर्ण मानकर इनका ग्रहण ही नहीं करते।

हस्तसालनात् पंकस्य दूराद वर्जनं पवरम्। हाथ में कीचड़ लेकर पुनः पानी से हाथ साफ करने की अपेक्षा कीचड़ का स्पर्श न करना ही श्रेष्ठ है यही विवेक का मार्ग है। योगदर्शनकार यही कहते हैं कि विवेकी व्यक्ति के लिए समस्त भोग दुःखदाई ही है क्योंकि वे परिणाम ताप तथा संस्कार के रुप में दुःख रुपता को ही उत्पन्न करते हैं महात्मा बुद्ध ने कदाचित इसी आशय से सर्व दुःखं दुःखं कहा है। आदि शंकराचार्य भी दुःखों के प्रति व्यक्ति को सावधान करते हुए कहते हैं।

जन्म दुःख जरा दुःखं व्याधिः दुःखं पुनः-पुनः।
मरणं तु महद दुःखं तस्मांजागृहि ॥

नाना भोगों को भोगने में सुख नहीं है इसे स्पष्ट करते हुए व्यास जी कहते हैं कि भोगों को भोगने में निम्न दोष है :-

(१) सभी भोग राग तथा द्वेष को उत्पन्न करते हैं।

(२) वे स्थाई नहीं है। उनके न मिलने पर तथा नष्ट होने पर कष्ट होता है।

(३) सुखोपभोग के कारण पुनः-पुनः उन भोगों को भोगने की इच्छा होती है। भोगों को भोग कर इन्द्रियों को तृष्णा रहित नहीं किया जा सकता है।

(४) भोगों में सुख से सुख के संस्कार तथा दुःख मिलने पर दुःख के संस्कार चित्त में संचित होते हैं। कठोपनिषद में यमाचार्य द्वारा समस्त भोगों का प्रलोभन दिये जाने पर नचिकेता भी लगों में इसी प्रकार के दोष दिखलाता हुआ कहता है - (१) सभी भोग नश्वर है। (२) ये इन्द्रियों की शक्ति को नष्ट कर देते हैं। (३) भोगों को भोगने के लिए समस्त जीवन भी कम है। समस्त जीवन में भी इन्हें नही भोगा जा सकता। इससे क्या होगा ? इसका उत्तर भर्तृहरि देते हैं कि शरीर के जीर्ण होने पर भी भोगों के प्रति हमारे मन की तृष्णा कम नहीं होगी अपितु मुद्राराक्षस के लेखक विशाखादत्त के शब्दों में तो **तृष्णैका तरुणायते**। अर्थात वृद्धावस्था में इन्द्रियों तथा शरीर की शक्ति शिथिल होने पर भी तरुणी की भांति तृष्णा बलवती होती जाती है। जो कि चित्त में विषाद, क्षोभ एवं पश्चाताप को ही उत्पन्न करती है। इसीलिए व्यास जी कहते है कि इस अनादि दुख स्रोत में अपने आपको निमग्न देखकर विवेकी पुरुष आत्मदर्शन की शरण में आता है जो कि सभी दुःखों का विनाशक है।

व्यास जी कहते हैं कि इस समस्त दुःख समुदाय का उत्पत्ति स्थान अविद्या है। योगदर्शन इस अविद्या पर ही प्रहार करता है। व्यास जी कहते हैं कि अन्य सभी क्लेशों के मूल में अविद्या ही है- **सर्वं एव तदा क्लेशा अविद्या भटाः।** अविद्या के कारण ही व्यक्ति दुख सागर में गोते खा रहा है। अविद्या के कारण वह उल्लासपूर्ण जीवन नहीं जी सकता तथा न ही आत्म दर्शन कर सकता है जो कि उसका परम लक्ष्य है योग दर्शन अविद्या को समूल नष्ट करके आत्मदर्शन का सर्ग बतलाता है। इसे ही पतंजलि ने तदा **द्रष्टुःस्वरुपेऽवस्थानम्** (यो. सू. १/२) के द्वारा कहा है। याज्ञवल्क्य स्मृति में तो योग के द्वारा आत्मदर्शन को परम धर्म कहा गया है। निरुक्त में यास्काचार्य तो यह भी कह रहे हैं कि गर्भस्थ जीव गर्भ में नाना कष्टों तथा अपने विविध जन्म-मरणों का स्मरण करता हुआ प्रतिज्ञा करके आता है कि इस घोर कष्ट से छूट कर संसार में जाकर मैं सांख्य तथा योग का अभ्यास करूंगा।

संसार में आकर वह अपनी प्रतिज्ञा को भूल जाता है इसीलिए आजीवन कष्ट उठाता है। संसार में आकर व्यक्ति यदि योग मार्ग का आश्रय लें तो वह सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेगा। जन्म लिया है तो जीना सबकी अनिवार्यता है। सोचना यह है कि हम प्रसन्नता-उल्लास-आनन्दपूर्वक जीना चाहते हैं या दुःख में निमग्न होकर तनाव का जीवन जीना चाहते हैं ? योग मार्ग ही ऐसा विज्ञान है कि जिसके द्वारा हम आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करते हुए मृत्यु के उपरान्त भी अमृतत्व को प्राप्त कर सकते हैं। योग मार्ग ही ऐसा दर्शन है कि जिसके माध्यम से हम अपने लक्ष्य को अपने स्वरुप को भलीभांति देख सकते हैं। **दृश्यतेऽनेनेति दर्शनम्। विशेषेण ज्ञायतेऽनेनेति विश्वनम्।** दर्शन का अर्थ है सूक्ष्म चिन्तन तथा विज्ञान।

- कानपुर (उ.प्र.)

देश निर्माण

मेहनत से मिलती है मंजिल-मेहनत करो जवान।
हमें मिलजुल कर करना है - देश का नव निर्माण ॥

काँटों के मुख मुड़ जाते हैं - राही के पग छूकर।
कर्मवीर के शब्द कोष में - लिखी नहीं थकान ॥

लौ लेकर पुरुषार्थ की बढ़ जा - अंधेड़ों से आगे।
रोक नहीं पायेंगे तेरी - राहें ये तूफान ॥

अन्न-धन के भंडार भरे हैं - धरती के कण-कण में।
हरियाली खेतों में लहरे - भरे भरे खलिहान ॥

बढ़ते कदमों की निष्कामी - शक्ति और गति को।
खुद ही रास्ता दे देते हैं - सागर और चट्टान ॥

तकदीरों की जंजीरें हम - तोड़ेंगे तदबीरों से।
अपनी किस्मत खुद लिखता है - मेहनतकश इन्सान ॥

- हरबंशलाल कपूर, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली

शहीदों को नमन

आक्रमण करने वालों का संहार करके।
अहसां किया तुमने संसार भर पे ॥
शहीदों तुम्हें नमन करता वतन।
जमाने ने देखा तुम्हारा बांकपन ॥
तेरी जय से गूँजे धरा और गगन।
भारत के सैनिक को शत-शत नमन ॥
तुमने जवानी बलिदान कर दी।
अमर प्यारे भारत की पहचान कर दी ॥
सुरक्षित रहे हर नगर का आन।
शहीदों तुम्हें नमन करता वतन ॥
भारत के सैनिक को शत-शत नमन।
आतंकवादी मारे बिन कफन ॥
किया दुष्टों और दुश्मनों का दमन।
भारत के सैनिक तुम्हें शत नमन ॥
न्यौछावर किया मातृभूमि पर तन।
तुम्हें नमन करता तुम्हारा वतन ॥
शहीदों तुम्हें नमन करता वतन।

वैचारिक विश्व शान्ति का केवल एक ही मार्ग है - "वैदिक धर्म"

- खुशहालचन्द्र आर्य

जैसे सत्य एक ही होता है, असत्य अनेकों हो सकते हैं। दो बिन्दुओं को मिलाने वाली रेखा केवल एक ही हो सकती है, टेढ़ी-मेढ़ी अनेकों हो सकती है। वैसे ही धर्म भी एक ही हो सकता है बाकी मत, पंथ, सम्प्रदाय अनेकों हो सकते हैं। धर्म वह होता है जो केवल मानव मात्र ही नहीं बल्कि प्राणी-मात्र की भलाई व कल्याण चाहने वाला हो। किसी भी जीव के प्रति अन्याय, पक्षपात व अत्याचार न करता हो। सब प्राणियों का पिता केवल एक ईश्वर ही है, इसलिए जितने भी प्रणी हैं, वे सभी ईश्वर के पुत्र-पुत्रियां हैं। पिता अपने सभी पुत्र व पुत्रियों को एक समान ही प्यार करता है, इसलिए जो धर्म ईश्वर-प्रदत्त होगा, वही धर्म सभी प्राणियों का हितकारी व कल्याणकारी होगा।

वेद ईश्वर के बनाए हुए हैं, इसलिए वैदिक धर्म यानि वेदों के अनुसार चलने वाला धर्म ही पूर्व मानव-मात्र का धर्म हो सकता है। बाकी जितने भी धर्म के नाम से प्रचलित मत, पंथ, सम्प्रदाय हैं वे सब किसी न किसी व्यक्ति विशेष द्वारा चलाए हुए हैं। मनुष्य एक अल्पज्ञ प्राणी है, वह चाहे कितना भी महान् क्यों न हों, उसके अल्पज्ञ होने के नाते कुछ न कुछ कमी व स्वार्थ जरुर-जरुर रहेगा। वह अपने ही मत वालों को अधिक पसन्द करेगा और दूसरों के मत वालों को कम पसन्द करेगा। यही भेद-भाव लड़ाई-झगड़े की जड़ है और एक दूसरे को अलग-अलग करती है और दुःख का कारण है।

विश्व में जितने भी मत व पंथ हैं वे सभी किसी न किसी व्यक्ति विशेष द्वारा चलाए हुए हैं। जैसे ईसाई मत ईशा ने चलाया था। मुस्लिम मत मोहम्मद साहब ने चलाया था, पारसी मत मूसा ने चलाया था, सिख मत गुरु नानक ने चलाया था, जैन मत महावीर स्वामी ने चलाया था और बौद्ध मत महात्मा बुद्ध ने चलाया था। इन मतों से विश्व का कल्याण कभी नहीं हो सकता इसलिए इन मतों को मानने से विश्व में सुख व शान्ति कभी भी स्थापित नहीं हो सकती। अब प्रश्न उठता है कि वैदिक धर्म से ही विश्व में सुख व शान्ति कैसे स्थापित हो सकती है ? इसके निम्नलिखित मुख्य कारण हैं -

(१) वैदिक धर्म सृष्टि के आदि में ईश्वर प्रदत्त धर्म है - मनुष्य में स्वाभाविक ज्ञान कम और नैमेत्तिक ज्ञान अधिक। पशु-पक्षियों में स्वाभाविक ज्ञान अधिक और नैमेत्तिक ज्ञान बहुत कम होता है। स्वाभाविक ज्ञान वह होता है जो जीवन चलाने के लिए आवश्यक होता है, जैसे खाना-पीना, सोना-जागना, उठना-बैठना, रोना-हंसना तथा सन्तान पैदा करना आदि। इन कामों का फल नहीं मिलता कारण ये हर जीव के लिए करने जरुरी हैं। दूसरा ज्ञान है नैमेत्तिक ज्ञान, वह सिखाने से सीखा जाता है। यह ज्ञान मनुष्य में अधिक है, इसीलिए मनुष्य सिखाने से सीखता है। बिना सिखाए वह मूर्ख ही बना रहता है। इसीलिए ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद हैं, यह चारों वेद चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य, अंगीरा थे, उनके हृदय में ईश्वर ने चारों वेद का प्रकाश क्रमशः किया और लोगों को सुनाया।

वैसे तो चारों वेदों का सन्देश चारों ऋषियों के मुख से सभी उपस्थित स्त्री व पुरुषों ने सुना पर ब्रह्म ऋषि ने उन चारों वेदों को कण्ठस्थ कर लिया और उसने अपने शिष्यों को तथा अन्य लोगों को सुनाया। और उन लोगों ने अपने पुत्र व पुत्रियों को सुनाया। इस प्रकार यह सुनना और सुनाना की परम्परा चालू हो गई। जब तक कागज, स्याही, दवात, कलम का आविष्कार नहीं हुआ और वेद पुस्तकों में लिखा नहीं गया, तब तक यह परम्परा चलती रही। पुस्तकों में लिखे जाने के बाद यह परम्परा प्रायः समाप्त हो गई पर दक्षिण में अभी तक भी चलती आ रही है। इसीलिए वेदों को श्रुति भी कहते हैं जिसका तात्पर्य है सुन-सुन कर सीखना। ईश्वर ने वेदों में मनुष्यों के लिए यह ज्ञान दिया है कि मनुष्य को क्या काम करने चाहिए और क्या काम नहीं

करने चाहिए। जिन कामों को करने से मनुष्य, धर्म, अर्थ, काम को धर्मानुसार यानि वेद अनुसार करने से इनके फल मोक्ष को प्राप्त कर सकता है, जो मानव-मात्र का अन्तिम लक्ष्य है जिसके पाने के लिए ईश्वर जीव को मनुष्य योनि में भेजता है। इसीलिए हम कह सकते हैं कि वैदिक धर्म ही एक ऐसा सच्चा धर्म है जिसके अनुसार चलने से मनुष्य अपने जीवन में स्वयं भी सुखी व प्रसन्न रह सकता है और दूसरों को भी सुखी व प्रसन्न रख सकता है। इसीलिए इसी धर्म को संसार में सुख व शान्ति स्थापित करने का आधार मानते हैं।

(२) वैदिक धर्म ही प्राणी मात्र से प्रेम करने की बात कहता है और परस्पर प्रेम से रहने की बात सीखाता है किसी से भी भेदभाव रखने की नहीं सिखाता। कारण वैदिक धर्म मानव-मात्र का धर्म है। किसी एक जाति, देश या वर्ग का नहीं है। ईश्वर सबका पिता है और यह धर्म उस पिता के द्वारा ही चलाया हुआ है। हम सब उस परमपिता परमात्मा के पुत्र व पुत्रियां है। पिता अपनी सन्तान का भला व कल्याण करना चाहता है। इसीलिए ईश्वर ने हमारे कल्याण के लिए ही वेदों का प्रकाश चार ऋषियों के हृदय में किया। वेदों में इतिहास भी नहीं है कारण यह आदि ग्रन्थ है। इतिहास बाद में लिखा जाता है।

(३) वेदों में न कोई कुछ घटा सकता और न ही कुछ बढ़ा सकता है - कारण यह पूर्ण ज्ञान है और पूर्ण ज्ञानवान ईश्वर द्वारा प्रदत्त है। बाकी हमारे धार्मिक ग्रन्थ रामायण, महाभारत, गीता, मनुस्मृति आदि में ब्राह्मणों ने अपने स्वार्थ के लिए काफी मिलावट कर दी है परन्तु वेदों में ये स्वार्थी ब्राह्मण कोई मिलावट नहीं कर पा रहे हैं कारण इनसे सस्वर बोलने में चढ़ाव-उतराव इस किस्म से है जिसके बोलने से मिलावट पकड़ी जाती है इससे वे मिलावट नहीं कर पाते इसलिए वह ईश्वरीय ज्ञान आज भी हमारे पास त्यों का त्यों हैं। इस अदितियता से यह भी सिद्ध होता है कि यह वेद ज्ञान ईश्वर का है।

(४) मानव-मात्र का धर्म वही हो सकता हो जो सृष्टि के आरम्भ से चला हो - बाद में चला हुआ धर्म, मानव-मात्र का नहीं हो सकता कारण उस धर्म के चलने से पहले भी कोई धर्म माना जाता होता। बाद में किसी व्यक्ति द्वारा चलाया हुआ धर्म, धर्म न होकर कोई मत, पंथ व सम्प्रदाय ही है जो कोई वर्ग विशेष द्वारा माना जाता है। इसलिए वैदिक धर्म जो सृष्टि से आरम्भ से चला हुआ है वही मानव-मात्र का धर्म है अन्य नहीं।

(५) वेद किसी देशीय भाषा में नहीं है, वेद संस्कृत भाषा में है, जो सब भाषाओं की जननी है और सृष्टि के आरम्भ की भाषा है। अन्य धर्म ग्रन्थ किसी देशीय भाषा में है, इसलिए वह मानव-मात्र का धर्म नहीं हो सकता।

(६) वेद प्रकृति के अनुसार है, वेदों में प्रकृति के विरुद्ध कोई बात नहीं है। जैसे एक व्यक्ति इतना योगी, तपस्वी व पहुंचा हुआ संन्यासी है जो एक समय में ही मुम्बई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली दिखाई देता है। यह बात प्रकृति विरुद्ध है। एक व्यक्ति एक समय में एक ही जगह दिखाई देगा। मनुष्यों द्वारा चलाए गए मत व पंथों में अपना चमत्कार दिखाने के लिए प्रकृति विरुद्ध बातें बताते हैं, जैसे ईसाई लोग कहते हैं ईशा की शरण में आ जाओ तुम्हारे सब पाप धुल जायेंगे और मोक्ष के अधिकारी बन जाओगे। मुस्लिम भाई कहते हैं कि मोहम्मद साहब ने चिटली उंगली से चान्द के दो टुकड़े कर दिये । पौराणिक भाई इस मामलें में सबसे आगे हैं। वे तो कहते हैं कि हनुमान जी ने बचपन में सूर्य को मुख में रख लिया, कुन्ती को कर्ण कान से हुआ था, भगवान कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को चिटली उंगली से उठा लिया। यह सब काम प्रकृति विरुद्ध है इसलिए यह सब असम्भव है। इस लिए यह सब अन्धविश्वास है वैदिक धर्म इन सब बातों को नहीं मानता। ये धर्म केवल बुद्धि, तर्क व विज्ञान सम्मत है, उसी बात को मानता है, जिसे हर व्यक्ति को मानना चाहिए जो यथार्थ है।

पता : गोविन्दराम आर्य एण्ड संस, १८०, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला) कलकत्ता-७०००००७

क्या यही गणतंत्र है?

लाज से पलके झुकाए देश के हिम खण्ड हैं।
जल रहा है शौर्य अब तो संयमों के कुण्ड हैं,
स्वार्थ के अंधड़ में बनकर तृण उड़ी संवेदना,
मांग सूनी रह गयी विधवा, बनी हर कल्पना,
है विधुर हर गीत टूटा, भावना का तंत्र है।
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है।।

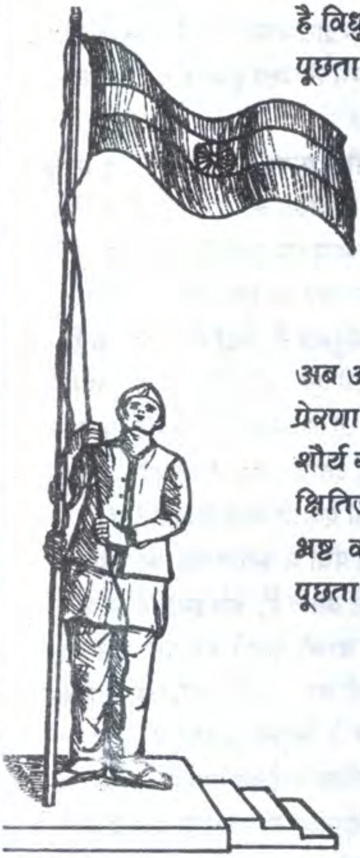

संस्कृति के द्वार पर, अब नीति की सांकल नही।
आस्था के शीश पर ,श्रद्धा का है आँचल नहीं,
नग्न स्वागत को खड़ी, है देश में निर्लज्जता,
अब पुरातत्वों में ही है ,शेष अपनी सभ्यता,
देह तो स्वतंत्र लेकिन, आत्मा परतंत्र है
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है।।

अब अनाथों की तरह, हर स्वप्न पलते नैन में।
प्रेरणा है खो गयी, अंधकारमय इस रैन में,
शौर्य साहस के कथानक, गूलरों के फूल हैं,
क्षितिज पर सम्भावना की, उड़ रही अब धूल है,
भ्रष्ट कर में खेलती यह, देश भक्ति यंत्र है।
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है।।

है यही उपलब्धि अपनी, निर्धनों की झुग्गियाँ।
रेशमी बिस्तर पर टूटी, अनगिनत है चूड़ियाँ,
करकटों में खोजता, रोटी मुझे बचपन मिला,
सो रहा फूटपाथ पर, इस देश का यौवन मिला,
किस तरह बोलें कि, हम तो हो गए स्वतंत्र हैं।
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है।।

वह फसल आतंक की, घर में हमारे बेचते।
बैठ दर्शक दीर्घा में, हम तमाशा देखते,
अब तो हर नेतृत्व, बन बैठा मृग मरीचिका,
चित्र सारे हैं अधूरे, खो गयी है तूलिका,
पृष्ठ पर सत्ता है केवल, हाशिया जनतंत्र है
पूछता हूँ मैं स्वयं से, क्या यही गणतंत्र है।।

: प्रेषक :
श्रीमती दीपाली वर्मा, सुपेला भिलाई (छ.ग.)

पुण्य स्मरण

पंजाब केशरी लाला लाजपतराय

२८ जनवरी जन्म दिवस पर विशेष

– डॉ. भवानीलाल भारतीय

आर्यसमाज के जिन महापुरुषों ने स्वदेश हित के लिए सर्वोत्कृष्ट बलिदान किए उनमें लाला लाजपतराय का नाम चिरस्मरणीय है ये वही बलिदानी थे जिन्होने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया था कि राष्ट्रभक्ति का पाठ उन्होने स्वामी दयानन्द से सीखा था । और आर्य समाज रूपी माता की गोद में बैठकर ही वे स्वदेश हित के लिए कुछ कर पाये । जन्म से वैश्य किन्तु गुण, कर्म एवं स्वभाव से क्षत्रिय लाजपतराय का जन्म पंजाब प्रान्त के जिला फरीदकोट के एक गांव ढुंढिके में २८ नवंबर १८६५ को हुआ । उनके पिता लाला राधाकृष्ण उर्दू फारसी के अच्छे जानकार तथा पेशे से अध्यापक थे। उन्होने इस्लाम की शिक्षाओं का गहराई से अध्ययन किया था। दीनेमुहम्मदी में उनकी गहरी आस्था थी। अग्रवाल बनिया होते हुए भी वे नियमित रूप से नमाज पढ़ते थे, रमजान के महीने में रोजा रखते थे।

१८८० में एण्ट्रेस की परीक्षा पास कर लाला लाजपतराय लाहौर आए। गर्वमेंट कालेज से एफ.ए. तथा कानून की मुख्तारी परीक्षाएँ साथ-साथ उत्तीर्ण की। १८८२ में वर्ष के वर्ष में लाहौर में ही वे आर्यसमाज के सम्पर्क में आये, लाला साईदास की प्रेरणा से वे समाज के सदस्य बने । पं. गुरुदत्त तथा लाला हंसराज जैसे युवक जहां कालेज में लाला लाजपतराय के सहपाठी थे वहां ये लोग आर्यसमाज में भी उनके सहयोगी कार्यकर्त्ता थे। जब ३० अक्टूबर १८८३ को आर्यसमाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द का अजमेर में निधन हुआ। तब आर्यसमाज लाहौर की ओर से ८ नवंबर को एक शोकसभा का आयोजन किया गया। इसमें निश्चय हुआ कि दिवंगत महर्षि की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज के नाम से एक ऐसी शिक्षण संस्था की स्थापना की

जावे जिसमें संस्कृत एवं हिन्दी के उच्च स्तरीय शिक्षण, वेदादि शास्त्रों की गंभीर शिक्षा के साथ-साथ पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान तथा अंग्रेजी भाषा के अध्ययन की व्यवस्था हो। डी.ए.वी. कालेज लाहौर की स्थापना तथा संचालन में लाला लाजपत राय का भी मूल्यवान सहयोग रहा। वे विभिन्न प्रतिनिधि मंडलों के सदस्य बनकर कालेज की स्थापना हेतु धन संग्रह के लिए देश के विभिन्न नगर में जाते रहे। जब यह महाविद्याय सुचारु रूप से चल पड़ा तब इसकी शिक्षा में नीति को प्रभावी एवं गतिशील बनाने में लालाजी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। कालान्तर में डी.ए.वी. कालेज में संस्कृत तथा वेदादि शास्त्रों के पाठ्यक्रम के स्वरूप और उसकी रूपरेखा को लेकर आर्य नेताओं में अनेक प्रकार के मतभेद उभर आए। किन्तु लालाजी ने इस विवादास्पद विषय पर पर्याप्त संतुलित दृष्टिकोण अपनाया।

१९२० में महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन चलाए गये और सरकारी स्कूलों और कालेजों के बहिष्कार की बात आई। तब लाला लाजपतराय ने भी डी.ए.वी. कालेज के संचालकों को देश की आजादी के महत्तर उद्देश्य को समक्ष रखकर कुछ काल के लिए कालेज को बंद कर देने का सुझाव दिया। यह दूसरी बात है कि महात्मा हंसराज ने ऐसा कदम उठाने से इन्कार कर दिया। उनकी दृढ़ धारणा थी कि किसी तात्कालिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण तथा स्थायी हित के कार्य की बलि नहीं दी जा सकती है। लाला लाजपतराय ने १८८५ में वकालत की परीक्षा पास की। कुछ काल तक रोहतक तथा हिसार में वकील के रूप में कार्य करने लगे। शीघ्र ही उन्हें

अपने कार्य में आशा से अधिक सफलता मिली। कानून के पेशे में भी उनकी प्रतिष्ठापूर्ण स्थिति थी।

१८८८ में वे कांग्रेस आन्दोलन से जुड़े प्रथम बार वे इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए। १९०६ में वे पं. गोपाल कृष्ण गोखले के साथ कांग्रेस शिष्टमंडल के सदस्य के रूप में इंग्लैण्ड गए। वहां से वे अमेरिका चले गए और देश की स्वतंत्रता के लिए पश्चिमी देशों में अनुकूल वातावरण बनाया। लाला जी ही प्रथम महापुरुष थे जिन्होंने राष्ट्रीय महासभा में पूर्ण आजादी प्राप्त करने के विचारों का प्रसार किया और ब्रिटिश ताज के अन्तर्गत रहकर देश को सीमित स्वतंत्रता प्राप्त करने के कांग्रेस के आदर्श का विरोध किया। उन्होंने लोकमान्य तिलक तथा बंगाली नेता विपिन चन्द्र पाल के सहयोग से कांग्रेस में उग्रवादी गरम विचार धारा का प्रवेश कराया। उन्होंने १९०५ में बनारस में ब्रिटिश युवराज के भारत आगमन के समय उनका स्वागत करते का डटकर विरोध किया। कांग्रेस में लोकमान्य तिलक और लाला लाजपतराय ने कांग्रेस की नरम नीतियों का प्रबल विरोध किया था इसका परिणाम कांग्रेस में पड़ी फूट के रूप में प्रत्यक्ष हुआ और पं. मदनमोहन मालवीय, रासबिहारी घोष, फिरोज शाह मेहता आदि नरम नेताओं ने महसूस कर लिया कि भारत अब भावी राजनीति को स्वरूप देना लाला लाजपतराय और उनके साथियों के अधिकार में आ गया है।

पंजाब में किसान जागृति और उससे उत्पन्न क्रान्तिकारी राजनैतिक चेतना के सूत्रधार लालाजी ही थे। उनके और सरदार अजीत सिंह के जोशीले व्याख्यानों से भयभीत होकर तत्कालीन शासन ने उन्हें देश से निर्वासित कर बर्मा के माण्डले नगर में नजरबंद कर दिया। किन्तु शासकों के इस अत्याचार पूर्ण कृत्य के प्रतिरोध में उठे प्रबल जनमत की अवहेलना करना सरकार के लिए संभव नहीं था लालाजी तथा सरदार अजीतसिंह को शीघ्र ही रिहा करना पड़ा। स्वदेश लौटने पर एक लोकप्रिय जननायक के रूप में उनका स्वागत हुआ और जनता उन्हें इस आंखों में उठा लिया। आर्यसमाज में रहकर ही लाला जी ने जनहित के कार्यों में भाग लेना सीखा था। १९११ में जब सम्पूर्ण उत्तर भारत अकाल की चपेट में आ गया तब लालाजी अपने साथियों को लेकर अकाल राहत कार्यों में जुट गए। उन्होंने अनाथ बालकों को आर्य अनाथालय फिरोजपुर में प्रवेश कराया, जबकि ईसाई मिशनरी उन्हें लेने को तैयार बैठे थे। १९०५ में कांगड़ा में भयंकर भूकंप ले जन-धन की अपार क्षति हुई। उस समय भी वे भूकंप पीड़ितों की सहायता के लिए दुर्गम पर्वतीय स्थलों पर पहुंचे। इस कार्य में डी.ए.वी. कालेज लाहौर के छात्र लालाजी के साथ थे। उड़ीसा, मध्यप्रदेश तथा संयुक्त प्रान्त में जब १९०७ में भयंकर दुष्काल पड़ा तब लालाजी तुरंत सहायता कार्यों में जुड़ गए।

अब तक लालाजी देश के राजनैतिक क्षितिज पर एक प्रकाशमान नक्षत्र की भांति उभर चुके थे। १९२० में विदेश यात्रा से लौटने पर उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा प्रवर्तित असहयोग आन्दोलन पर समर्थन किया। इसी वर्ष कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष बनाए गए। १९२४ में उन्होंने स्वराज्य पार्टी का गठन किया और केन्द्रीय असेम्बली के सदस्य चुने गए स्वामी श्रद्धानन्द पं. मदनमोहन मालवीय की ही भांति लालाजी का कांग्रेस की अल्पमत वालों के प्रति तुष्टिकरण की नीति से घोर मतभेद था। इसलिए उन्होंने हिन्दू सभा सच्चे राष्ट्रवादी नेताओं की दृष्टि में संकीर्ण या साम्प्रदायिक जमात नहीं समझी जाती थी। इसलिए १९२५ में हिन्दू सभा के कलकत्ता अधिवेशन के वे सभापति बनाए गए।

१९२८ में भारत की राजनैतिक स्थिति का जायजा लेने के लिए इंग्लैण्ड से सायमन कमीशन यहां भेजा गया कांग्रेस ने इसका बहिष्कार का निर्णय लिया। ३० अक्टूबर को कमीशन लाहोर आया। नागरिकों ने कमीशन के सदस्यों को रेल्वे स्टेशन पर ही काले झंडे दिखाने का निश्चय किया। पंजाब सरकार ने धारा १४४ लगा दी। तथापि सैकड़ों लोग स्टेशन पर एकत्र हो गए। सायमन वापस जाओ के नारों से आकाश गूंज उठा। पुलिस को डण्डे बरसाने का आदेश मिला निहत्थे नागरिकों पर डण्डा प्रहार होने लगा। अंग्रेज सार्जेंट सांडर्स ने लालाजी की छाती पर लाठी का प्रहार किया। भारत के इस बूढ़े शेर को मार्मिक आघात पहुंचा। उसी सायंकाल आयोजित जनसभा में नर केसरी लाला

लाजपतराय ने गर्जनापूर्ण स्वर मेंकहा कि मेरे शरीर पर पड़ी विदेशी सरकार की एक-एक लाठी अंग्रेजी राज्य के कफन की कील साबित होगी। इसी लाठी प्रहार से पीड़ित लाला लाजपतराय का १७ नवंबर १९२८ को निधन हो गया।

लालाजी का व्यक्तित्व बहु आयामी था। वे एक श्रेष्ठवक्ता, प्रभावशाली लेखक, सार्वजनिक नेता और कार्यकर्त्ता, समर्पित समाज सेवक, शिक्षा शास्त्री गंभीर चिंतक तथा विचारक थे। उन्होने उर्दू तथा अंग्रेजी में अनेक उत्कृष्ट ग्रन्थों की रचना की भारत तथा विदेश के कतिपय महापुरुषों के उनके द्वारा लिखित जीवन चरित अत्यंत लोकप्रिय हुए। सम्राट अशोक, शिवाजी, स्वमी दयानन्द, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी तथा योगीराज श्रीकृष्ण के जीवन चरित्र तो उन्होने लिखे ही इटली के देशभक्त तथा मैजिनी के जीवन चरित्रों ने उन्हे अभूतपूर्व ख्याति दिलाई। देशवासियों में स्वातंत्र्य चेतना जागृत करने में इन ग्रन्थों की भूमिका इतनी महत्त्वपूर्ण मानी गई कि विदेशी शासन में उन जीवनियों पर प्रतिबंध लगा दिया। भारतीय शिक्षा तथा अर्थशास्त्र जैसे विषयों पर भी उन्होने प्रामाणिक ग्रन्थ लिखे। उनकी लिखी दि आर्यसमाज नामक पुस्तक १९१४ में प्रकाशित हुई। लाला जी ने अपनी आत्म कथा भी लिखी है। पता: ८/४२३, [illegible], जोधपुर (राज.)

न बन्धुमध्ये धनहीन जीवनम्

वरं वनं व्याघ्रगजेन्द्रसेवितं, द्रुमालये पत्रफलाम्बुभोजनम्।
तृणानि शय्या वसनं च वल्कलं, न बन्धुमध्ये धनहीनजीवनम्॥ (पञ्चतन्त्र)

भावार्थ : कहावत है कि - बुरे दिनों में कोई किसी का नहीं होता सच ही है सिंह, हाथी आदि से घिरे हुए वन में चले जाना श्रेयस्कर है, वृक्ष के नीचे घर बनाकर पत्तों फलों और जल को खा पीकर भोजन से निर्वाह कर लेना ठीक है, घांस की शय्या और वल्कल (वृक्षाजिन) का वस्त्र बनाकर दिन गुजारना भी अच्छा है परन्तु गरीब होकर अपने कुटुम्बीजनों के मध्य रहना उचित नहीं है। निर्धनावस्था में सभी लोग हँसी उड़ाते हैं कुटुम्बीजन तो विशेषतया उपेक्षा करते हैं। - सुभाषित सौरभ

राष्ट्रीय एकता के सूत्रधार थे- स्वामी श्रद्धानन्द - डॉ. सत्यपाल सिंह

नई दिल्ली। स्वामी श्रद्धानन्द निराले महापुरुष थे, जिन्होने वैदिक में मंत्रों में जामा मस्जिद के मिम्बर से मानवता का संदेश दिया। हमारा समाज आज पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित है। अपने पूर्वजों की आचार संहिता व आदर्श नीतियों से देश का सर्वांगीण विकास सम्भव है। जिसके लिए शिक्षा नीति में संशोधन होगा। ये उद्गार सत्यपाल सिंह, मानव संसाधन मंत्री, भारत सरकार ने रामलीला मैदान में आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित ९१वें स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह में कहे। मुख्य अतिथि मेघालय के राज्यपाल गंगा प्रसाद ने स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा प्रदीप्त गुरुकुल शिक्षा पद्धति लागू करने पर बल दिया। राष्ट्रीय आन्दोलन में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार की अग्रणी भूमिका रही। वैदिक विद्वान् डॉ. विनय विद्यालंकार, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के वरि. अधिकारी कृष्ण गोपाल व ओमप्रकाश पाण्डेय, कानून विशेषज्ञा मोनिका अरोड़ा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य, सुरेन्द्र रैली ने उद्‌बोधन दिये। स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार से विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। जिसका नेतृत्व स्वामी धर्ममुनि, धर्मपाल आर्य, सुरेन्द्र रैली, सतीष चड्डा, अरुण वर्मा ने किया। आर्यवीर दल आर्य वीरांगना दल के भव्य व्यायाम प्रदर्शन हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ विश्व कल्याण यज्ञ से हुआ।

संवाददाता : चन्द्र मोहन आर्य, प्रेस सचिव, दिल्ली

पुण्य स्मरण स्वतन्त्रतानन्द जी तो स्वतन्त्रतानन्द ही थे

- स्वामी सदानन्द सरस्वती

जन्म एवं जन्म स्थान :-

लुधियाना जिला ने राष्ट्र को अनेक विभूतियाँ दी हैं। स्वाधीनता संग्राम के यशस्वी सेनापति लाला लाजपतराय, शास्त्रार्थसमर के विजयी योद्धा, आर्य गौरव स्वामी दर्शनानन्द जी, स्वाधीनता सेनानी साहित्यकार सत्यदेव जी परिव्राजक इसी जिले की देन हैं। पं. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी भी इसी जिले के ही देन हैं। महर्षि दयानन्द १८७६ में पंजाब आए। उनके आगमन से वीर-भूमि के निवासियों में चेतना का संचार हुआ। इस नवजागरण की बेला में लुधियाना जिले के मोही ग्राम के सरदार भगवान सिंह के घर में पौष मास विक्रम संवत १९३४ की पूर्णिमा को बालक केहरसिंह का जन्म हुआ। माता-पिता ने आपका नाम केहरसिंह रखा। केहर का अर्थ है- सिंह, तो केहर सिंह का अर्थ है - सिहों का सिंह। केहरसिंह ने अपने नाम को सार्थक करके दिखाया। यथा नाम तथा गुण की उक्ति आप पर पूर्ण रुपेण चरितार्थ होती है।

स्वराज्य आन्दोलन :- आपने मालेरकोटला, लोहारु व निजाम हैदराबाद के विरुद्ध सफल मोर्चे लगाकर लोगों के अधिकारों की रक्षा की। महात्मा गांधी जी भी आपकी कार्यक्षमता से प्रभावित हुए। आपके सफल कुशल नेतृत्व से आर्यसमाज की विजय हुई। स्वराज्य आन्दोलनों की गति तीव्र हुई। आर्यसमाज के प्रचार के लिए आप पूर्वी अफ्रीका और मॉरीशस गए। आपने वहां पर रह रहे भारतीयों की सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनैतिक अवस्था का अध्ययन करके भारतीय हितों की रक्षा के लिए बड़ा काम किया। अस्पृश्यता निवारण और दलितोद्धार के लिए अनेक कार्य किए। आप कई भाषाओं के विद्वान्, लेखक, सुवक्ता व इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान् थे। आप आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के कार्यकर्ता प्रधान रहे।

पूर्वज :- स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी के पूर्वज हल्दी घाटी (राजस्थान) से आकर यहां मोही ग्राम में बसे थे। स्वामी जी के रगों में राजस्थान के शूरवीरों व बलिदानियों का उष्ण रक्त बह रह था। सरदार भगवान जी की पत्नी की मृत्यु के बाद केहर सिंह जी का लालन-पालन उनके ननिहार कस्बा लताला में हुआ।

आर्यसमाज की छाप :- केहरसिंह जी लताला के उदासी साधुओं के डेरे में पं. बिशनदास जी से वैद्यक पढ़ते थे। पं. बिशनदास जी संस्कृतज्ञ एवं सुयोग्य चिकित्सक थे। पं. जी वैदिक धर्मी विचारं के थे। उनके प्रभाव में आकर केहरसिंह पर भी आर्यसमाज की छाप पड़ी।

गृह त्याग और ब्रह्मचर्य व्रत :- सरदार भगवान सिंह की इच्छा थी कि केहर सिंह सेना में जनरल कर्नल बने, परन्तु उन्होंने वैभवशाली परिवार को त्यागकर संन्यासी बनना उचित समझा। ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए उन्होंने धर्मशास्त्रों का अध्ययन व अध्यापन संस्कृत का अभ्यास व उपदेश देते हुए कई वर्षों तक कौपीनधारी रहे।

संन्यास और विदेश यात्राएँ :- आर्यसमाज के नेताओं और विद्वानों में स्वामी जी ने सर्वप्रथम दीक्षा ली। इनको संन्यास की दीक्षा फिरोजपुर जिले के परवरनड़ नामक ग्राम में श्री स्वामी पूर्णानन्द जी ने विक्रम संवत १९५७ में दी। स्वामी पूर्णानन्द जी ने आपको प्राणपुरी नाम दिया। सन्यास लेकर आप ३-४ वर्ष के लिए दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में बिना किसी सभा-संस्था की आर्थिक सहायता के धर्म-प्रचार करते रहे। स्वदेशागमन पर पं. बिशनदास जी की आज्ञा से आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में जुट गए। योगाभ्यास, स्वाध्याय, राष्ट्रभाषा प्रचार, ग्राम सुधार, ब्रह्मचर्य, व्यायाम आदि के लिए पहले रामा मण्डी फिर लुधियाना को केन्द्र बनाया। १९१४ ई. में मॉरीशस में वेद प्रचार के लिए गए। वहां धर्मोपदेश करते हुए वहां के लोगों को संगठन सूत्र में बांधा। भारत के राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए राष्ट्र भाषा का प्रचार किया। मॉरीशस के लोगों

पर नैतिक उत्थान और चरित्र निर्माण किया।

स्वतन्त्रता संग्राम :- १९१६ में स्वदेश वापसी पर आर्यसमाज के कार्य के साथ राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े। मार्शल ला (१९१९ ई.) के दिनों में मदनमोहन मालवीय जी की प्रेरणा से कांग्रेस को सहयोग दिया। १९२० ई. में बर्मा गए। माण्डले की ईदगाह से २५००० के जनसमूह में स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ स्वराज्य का प्रचार किया। अंग्रेज सरकार को आप कांटे की तरह चुभने लगे। १९३० ई. में लाहोर में कांग्रेस की सभा से भाषण देने के कारण आपको काल कोठरी में बन्द कर दिया गया।

दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापना :- १९३८ में इनके द्वारा दीनानगर में दयानन्द मठ की स्थापना की गई। इससे पहले मानव केन्द्र बनाया गया। धर्म प्रचार संस्कृत प्रसार का यह केन्द्र बन गया। सहस्रो रोगी हर मास यहां औषधालय से चिकित्सा करवाते हैं। कई क्रान्तिकारी देशभक्त भूमिगत होने पर इसी आश्रम में शरण लेते रहे। महात्मा गांधी जी ने स्वामी स्वतन्त्रतानन्द के सुशिष्य यति को विशेष रुप से दयानन्द मठ से ही सत्याग्रह करने की आज्ञा दी। उस समय स्वामी जी के उत्तराधिकारी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज मठ के अध्यक्ष थे।

निर्वाण :- भीमकाय स्वतन्त्रतानन्द इतिहास में वर्णित हनुमान भीष्म दयानन्द सरीखे ब्रह्मचारियों की कड़ी में से एक थे। ३ अप्रैल १९५५ ई. को बम्बई में आपको निर्वाण की प्राप्ति हुई।

पता : दयानन्द मठ, दीनानगर, गुरुदासपुर (पंजाब)

कविता

दयानन्द सन्देश

दण्डी विरजानन्द के, दयानन्द पट शिष्य।
दिव्य चक्षु से पढ़ लिया, जीवन-लक्ष्य-भविष्य।
दयानन्द जी के वचन, आर्ष-ग्रन्थ-सुविचार।
मानवता को शक्ति दे, वैदिक-धर्म-प्रचार।
दिव्य ज्ञान भण्डार है, पुण्य पुरातन वेद।
ढोंग-प्रदर्शन त्याग से, मिट जाते भ्रम-भेद।
दयानन्द जी ने कहा, वेद ईशकृत-ग्रन्थ।
वेदों के आचरण से मिले, सत्य-शुभ-पंथ।
वेद ज्ञान से ही रहा, सुखी युगों तक देश।
प्रासंगिक है आज भी, दयानन्द-सन्देश।
सहज-सरल संस्कार, विधि अपनाएं सब आर्य।
पढ़ सत्यार्थ प्रकाश को, करें लोक हित कार्य।
अमृत-रुपी वल्लरी, पुष्पित आर्य समाज।
भ्रमित विश्व को चाहिए, वेद दिशा ही आज।
वेदों का अनुकरण ही, आर्यों का सद्धर्म।
वेद पठन-पाठन-श्रवण, नित नियमित हो कर्म।
घोर अविद्या नष्ट हो, विद्या की हो वृद्धि।
सबकी उन्नति में निहित, जग की परम समृद्धि।
ऋषिवर के उपकार का, सारा विश्व कृतज्ञ।
तन-मन को दे दिव्यता, आर्यसमाजी यज्ञ।

- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, ११७, आदिलनगर, विकास नगर, लखनऊ-२२६०२२

स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज का १४१वाँ जन्मोत्सव

लौह पुरुष फील्ड मार्शल, पूज्य स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज का १४१वाँ जन्मोत्सव दयानन्द मठ, दीनानगर में में बड़े ही हर्षोल्लास एवं उत्साह सहित दिनांक २ जनवरी २०१८ दिन मंगरवारको मनाया जा रहा है, जिसमें आप आर्य महानुभावों की सहभागिता हम सहृदय चाहते हैं। समारोह में आपके आगमन से शोभा बढ़ेगी।

प्रबन्धक : डॉ. आर. के. तुली, दीनानगर

आरोग्य जगत्

होमियोपैथी से सम्पूर्ण रोगों का उपचार

- डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

लाईलाज बीमारियों से दर्द मुक्ति पाने के लिए मनुष्य सदियों से प्रयत्नरत है। प्राचीन समय में बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए लोग वैद्य-हकीमों, जादूगरों, शौमैनों और पुजारियों की शरण लेते थे। आधुनिक समय में बीमारियों के इलाज के लिए हालांकि अनेक आधुनिक औषधियों, आधुनिक किस्म की सर्जरी और अनेक चिकित्सा विधियों का विकास हो चुका है, लेकिन अक्सर देखा जाता है कि उपचार की ऐलोपैथिक की औषधियाँ एवं आधुनिक चिकित्सा विधियों से बीमारियां दूर होने के बजाय गंभीर होती जाती है और एक स्थिति ऐसी आती है जब दवाईयां और इंजेक्शन निष्प्रभावी हो जाते हैं। कई बार ये दवाईयां खुद मर्ज से कहीं अधिक परेशानी पैदा करती है। इन दवाईयों के दुष्प्रभाव के कारण नयी बीमारियां पैदा हो जाती है। कई बार ऐलोपैथी दवाएं रक्त स्राव अथवा दिमागी दौरे का कारण बन जातीहैं, जिनसे रोगी की मौत तक हो सकती है।

आज जब दर्द निवारक दवाईयों के अंधाधुंध सेवन ने एक महामारी का रुप धारण कर लिया है वैसे में अनेक देशों में होम्योपैथिक चिकित्सा को दर्द निवारण एवं प्रबंधन की कारगर एवं दुष्प्रभाव रहित पद्धति के रुप में लोकप्रियता हासिल हो रही है। कोई भी दर्द लाइलाज नहीं होता है। दर्द शरीर के किसी भाग में उत्पन्न किसी न किसी व्याधि का संकेत होता है और इसलिए दर्द को स्थायी तौर पर जड़ से दूर करने के लिये उस व्याधि या दर्द के कारण को ठीक करना जरुरी है। होम्योपैथिक चिकित्सा मरीज को दर्द से राहत दिलाने के साथ-साथ दर्द के कारण को दूर करती है। इसलिये किसी भी तरह के दर्द और रोग से ग्रस्त मरीज को जल्द से जल्द होम्योपैधिक चिकित्सा की मदद लेनी चाहिए

हमने यह पाया है कि होम्योपैधिक चिकित्सा दर्द से प्रभावित क्षेत्र की मांसपेशियों को रिलेक्स करने में मदद करती है तथा शरीर में प्राकृतिक दर्द निवारक तत्व के उत्सर्जन को बढ़ाती है। इसके अलावा यह प्रभावित भाग में रक्त प्रवाह को बढ़ाती तथा वहां की स्नायुओं की कार्य क्षमता में सुधार लाती है। इसके परिमाम स्वरुप होम्योपैधिक चिकित्सा दर्द से तत्काल राहत दिलाने के साथ-साथ शरीर की हिलिंग रिस्पौन्स को स्पंदित करती है। डॉ. त्रिवेदी का कहना है कि होम्योपैथिक चिकित्सा को प्रसव पीड़ा को नियंत्रित करने तथा सामान्य प्रसव सुनिस्चित कराने में काफी कारगर पाया गया है। कुछ समय तक होम्योपैथिक चिकित्सा नियमित रुप से लेते रहने पर दर्द धीरे-धीरे कम होता है और कुछ समय बाद दर्द इतना कम या नगण्य हो जाता है कि मरीज को सामान्य जीवन में कोई दिक्कत नहीं होती है। होम्योपैथिक चिकित्सा के साथ मरीज दर्द से राहत पाने के लिये एक्युप्रेशर, योग एवं ध्यान, रेकी चिकित्सा आदि की भी मदद ले सकता है। होम्योपैथिक चिकित्सा जैसी विभिन्न वैकल्पिक चिकित्सा प्रणालियों की मदद से लाइलाज बीमारियों से पीड़ित मरीजों को किसी दवाई की मदद से बगैर स्थायी तौर पर राहत दिलायी जा सकती है। होम्योपैथिक चिकित्सा कमर, दर्द, गर्दन दर्द, आथ्रराइटिस, ओस्टियो-अथ्रराइटिस, गठिया, सियाटिका, कैंसर पीड़ा, सिर दर्द, माईग्रेन, इरीटेबल बाउल सिंड्रोम, साइनुसाइटिस, डिस्क समस्या, पेटदर्द, हर्पिज, न्यूरोल्जिया और डायबेटिक न्यूरोपैथी जैसे किसी भी तरह के दर्द का सफलतापूर्वक निवारण हो सकता है। इसके अलावा हाल के वर्षों में होम्योपैथिक चिकित्सा को कैंसर रोगियों को कष्टों से निजात दिलाने की एक महत्वपूर्ण तरकीब के रुप में माना जाने लगा है। मौजूदा समय में होम्योपैथिक चिकित्सा एक सम्पूर्ण चिकित्सा पद्धति के रुप में विकसित हुआ है।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबन्ध, रायपुर (छ.ग.)

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का ९१वाँ बलिदान दिवस के अवसर पर

तीन दिवसीय विश्व शान्ति महायज्ञ सोल्लास सम्पन्न

रायपुर। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, रायपुर संभागीय समस्त आर्यसमाजों, महर्षि दयानन्द सेवाश्रम, आर्यसमाज टाटीबन्ध, महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित दिनांक २१, २२ व २३ दिसम्बर २०१७ को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का ९१वाँ बलिदान दिवस कार्यक्रम बड़ी धूमधाम से महर्षि दयानन्द सेवाश्रम प्रांगण में सम्पन्न हुआ।

विशाल प्रभात फेरी

दिनांक २१ दिसम्बर २०१७ गुरुवार को प्रातःकाल ८.३० बजे से शोभा यात्रा महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध से बस्ती से गुरुद्वारा होते हुये एम्स के सामने से जी.ई. रोड पर ऋषि दयानन्द के जय-जयकार करते हुये एवं स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान को संस्मरण करते हुये १००० बालक-बालिकाएं, शिक्षक-शिक्षिकायें, प्रबुद्ध नागरिकों एवं सभा के पदाधिकारियों द्वारा लगभग २ घंटे के भ्रमण के बाद विशाल शोभा यात्रा समाप्त हुआ।

ध्वजोत्तोलन, यज्ञ, भजन, प्रवचन

तदोपरान्त १०.३० बजे ओ३म् ध्वजोत्तोलन किया गया, स्वामी देवानन्द सरस्वती, आचार्य अंशुदेव आर्य (प्रधान छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा) मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। तदूपरान्त विश्व शान्ति महायज्ञ सभा प्रधान के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ, जिसमें मुख्य रुप से वैदिक प्रवक्ता डॉ. कमलनारायण आर्य रायपुर, पं. संत काशीनाथ चतुर्वेदी रायपुर सहित वेदपाठी के रुप में पं. संजय शास्त्री, पं. मुकेश पाठक वैदिक गुरुकुल टाटीबन्ध, पं. उद्धव शास्त्री पुरोहित (छ.ग.) एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारी उपस्थित थे।

द्वितीय सत्र में दोपहर २ से ५ बजे तक महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय टाटीबन्ध रायपुर का सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने छत्तीसगढ़ी नृत्य, नाटक का कार्यक्रम हुआ, अन्त में पं. नंदकुमार आर्य का सुमधुर संगीतमय भजनोपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

मंच पर सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, श्री दीनानाथ वर्मा सभा मंत्री, श्री दयाराम वर्मा प्रधान आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, श्री चतुर्भुज कुमार आर्य उपमंत्री सभा, श्री दिलीप आर्य उपमंत्री आदि सभा के पदाधिकारीगण, आचार्य संत काशीनाथ चतुर्वेदी, डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी, श्री सुभाषचन्द्र श्रीवास्तव, श्री लक्ष्मण प्रसाद वर्मा, श्री लोकनाथ आर्य आदि आर्यसमाज के पदाधिकारी व सदस्यगण उपस्थित रहे।

विश्व शान्ति महायज्ञ के मुख्य यजमान के रुप में श्री विनोदसिंह प्राचार्य सपत्नीक, श्री पुरुषोत्तम वर्मा उपाचार्य सपत्नीक, आर्यसमाज टाटीबन्ध के श्री सुभाषचन्द्र श्रीवास्तव सपत्नीक, श्री लक्ष्मण प्रसाद वर्मा सपत्नीक एवं विद्यालय के समस्त शिक्षक-शिक्षिकायें उपस्थित रहे। दर्शक दीर्घा में लगभग १००० नागरिक एवं विद्यालय के छात्र-छात्रायें उपस्थित होकर यज्ञ में आहुति देकर कृतकृत्य किया।

यज्ञ, भजन, प्रवचन

द्वितीय दिवस दिनांक २२ दिसम्बर २०१७ शुक्रवार को प्रातः ९ बजे से १०.३० बजे तक विश्व शान्ति महायज्ञ का कार्यक्रम हुआ। यज्ञोपरान्त १०.३० बजे से दोपहर १.०० बजे तक एवं दोपहर २ बजे से सायं ५ बजे तक भजन, प्रवचन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

श्रद्धानन्द बलिदान संस्मरण दिवस एवं पूर्णाहुति

दिनांक २३ दिसम्बर २०१७ शनिवार को प्रातः ९ बजे विश्व शान्ति महायज्ञ की पूर्णाहुति की गई, जिसमें मुख्य यजमानों, शिक्षक-शिक्षिकाओं व छात्र-छात्राओं द्वारा यज्ञ की वेदी पर वैदिक मंत्रों द्वारा आहुति प्रदान कर पुण्य के भागी बने। यज्ञ के ब्रह्मा सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव जी आर्य रहे। वैदिक प्रवक्ता डॉ. कमलनारायण आर्य रायपुर के वेदों पर आधारित पर्यावरण प्रदूषण का उपाय यज्ञ पर

सारगर्भित व्याख्यान तीनों दिन हुए। पूर्णाहुति के अवसर पर आचार्य कर्मवीर शास्त्री जी ने "छात्र जीवन में संस्कारों का महत्व पर प्रकाश डाला"। कार्यक्रम के अंतिम दिवस पर विशिष्ट अतिथि के रुप में धर्मजागरण प्रमुख, विश्व हिन्दु परिषद प्रमुख, हिन्दू महासभा प्रमुख, गायत्री परिवार प्रमुख, संस्कृत विद्यामण्डलम् प्रमुख श्री सुरेशचन्द्र शर्मा एवं लक्ष्मण प्रसाद साहू, विद्यार्थी परिषद प्रमुख, योग आयोग प्रमुख, गौ सेवा आयोग प्रमुख, गुरुसिंह सभा प्रमुख, शदाणी दरबार (अध्यक्ष) प्रमुख, बजरंग दल प्रमुख, महंत दुधाधारी मठ प्रमुख, भारत स्वाभिमान प्रमुख उपस्थित रहे, जिनका सम्मान शाल, श्रीफल एवं साहित्य सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर किया गया।

पूर्णाहुति उपरान्त ऋषि लंगर में हजारों श्रद्धालुओं ने भोजन के रुप में प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, आर्यसमाज राजेन्द्रनगर, कटोरातालाब, आर्यसमाज कोहका, आर्यसमाज सेक्टर-६ भिलाई के मंत्री डॉ. राजकुमार शास्त्री सहित अन्य आर्यसमाजों के पदाधिकारी एवं सदस्यगण उपस्थित रहे। सभा कोषाध्यक्ष श्री जोगीराम आर्य, डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी, श्री दयाराम वर्मा, श्री दयालदास आहूजा, श्री केवलकृष्ण ब्रिज, श्री लक्ष्मण प्रसाद वर्मा, श्रीमती रामेश्वरी माता, श्रीमती मन्जु माता, श्री भुवनेश्वर प्रसाद वर्मा, श्री छबिलसिंह रघुवंशी, श्री दयालदास आहूजा, श्री तापेश्वर शर्मा, श्री दिलीप आर्य, श्री दयाशंकर तिवारी, श्रीमती माला कुकरेजा, श्री जोगेन्द्र कुमार सोनके, श्रीमती संगीता सिंह, कु. संजू साहू, श्रीमती निर्मला वर्मा, श्रीमती राजश्री मरजीवे, श्री लोकनाथ आर्य प्रबंधक दयानन्द सेवाश्रम, श्री सुभाषचन्द्र श्रीवास्तव प्रधान आर्यसमाज टाटीबन्ध का विशेष सहयोग रहा। विद्यालय के प्राचार्य श्री विनोद सिंह जी तथा उनका पूरा विद्यालय परिवार के अथक परिश्रम से यह विशाल कार्यक्रम सफलता की ऊंचाई प्राप्त कर सका।

संवाददाता : निजी संवाददाता

श्रद्धानन्द विद्यालय ने मनाया "स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस"

रायपुर। श्रद्धानन्द आर्य विद्यालय संतोषीनगर एवं आर्यसमाज मंदिर बैजनाथपारा रायपुर के संयुक्त तत्वावधान में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस दिनांक १८ से २० दिसम्बर २०१७ तक एवं विद्यालय का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम तीनों दिन मुख्य अतिथि व यज्ञ के ब्रह्म के रुप आचार्य अंशुदेव आर्य प्रधान छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं सहयोगी सहित उपस्थित थे। कार्यक्रम में वैदिक भजनोपदेशक पं. नन्द कुमार आर्य एवं पं. सूरज आर्य पुरोहित आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर का यज्ञ, सत्संग, वैदिक भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम सोल्लास सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में आर्यसमाज टाटीबन्ध रायपुर, आर्यसमाज कटोरातालाब रायपुर, महिला आर्य समाज जवाहर नगर रायपुर, आर्यसमाज संतोषीनगर रायपुर, आर्य शिक्षण समिति संतोषी नगर रायपुर के समस्त पदाधिकारी व सदस्यगण मुख्य रुप से उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

दिनांक २० दिसम्बर २०१७ को श्रद्धानन्द आर्य विद्यालय का वार्षिकोत्सव दोप. २ से ५ बजे तक विद्यालय के छात्र-छात्राओं द्वारा आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में हजारों की संख्या में नागरिकों की उपस्थिति रही। इस अवसर पर सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, श्री दयाराम वर्मा उपप्रधान सभा, श्री सी. एल. यादव अध्यक्ष श्रद्धानन्द आर्य विद्यालय संतोषीनगर, श्री सी.एस. रघुवंशी मंत्री आर्यसमाज बैजनाथपारा, श्री केशवराम श्रीवास सचिव श्रद्धानन्द आर्य विद्यालय संतोषीनगर, श्री बी.पी. शर्मा संस्थापक श्रद्धानन्द आर्य विद्यालय संतोषीनगर, प्राचार्य श्रद्धानन्द आर्य विद्यालय संतोषीनगर, अध्यापक-अध्यापिकाएँ, छात्र-छात्राओं सहित आस-पास के गणमान्य नागरिकगणों की भारी संख्या में उपस्थिति रही। इस कार्यक्रम में सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य के संगीतमय भजनों से पूरा वातावरण वैदिकमय हो गया।

संवाददाता : निजी संवाददाता

एक ऐतिहासिक कदम

आर्य प्रतिनिधि सभा छ.ग. (डॉ. कमलनारायण आर्य) का छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा (आचार्य अंशुदेव आर्य) में विलय

दुर्ग। छत्तीसगढ़ निर्माण के साथ ही प्रदेश में दो सभाएँ (आर्य प्रतिनिधि सभा छ.ग. एवं छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा) बनी थी। दोनों के बीच एक लम्बा गतिरोध निर्मित हो गया था, जिसे पिछले दिनों आर्यों की शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के समझौता आदेश के तहत आर्य प्रतिनिधि सभा छत्तीसगढ़ को छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा में विलय कर दिया गया। आदेशानुसार डॉ. कमलनारायण आर्य को उपप्रधान (दुर्ग संभाग) कार्यकारी प्रधान वेद प्रचार प्रकोष्ठ पद पर विगत अधिवेशन दिनांक २१ दिसम्बर २०१७ को सभा की अन्तरंग बैठक महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर में सभा के सभी गणमान्य पदाधिकारी एवं अंतरंग सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति में प्रतिष्ठित कर दिया गया। छत्तीसगढ़ आर्य जगत में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई, इसके साथ ही छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा अपने औदार्यभाव का परिचय देते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा छ.ग. विलय से पूर्व उपप्रधान श्री राकेश दुबे जी को प्रान्तीय सभा ने उपमंत्री (दुर्ग संभाग) एवं उसी सभा के मंत्री आचार्य विद्यानिधि शास्त्री जी को दुर्ग संभाग वेद प्रचार अधिष्ठाता नियुक्त कर दिया गया है।

यह घटनाक्रम छ.ग. आर्यजगत के लिए एक शुभ संकेत के रुप में उपस्थित हुआ है, गुरुकुलों से निकले दो स्नातक भारत के किसी भी प्रान्त में (प्रधान, कार्यकारी प्रधान) एक साथ नहीं है, इससे बड़ी उदात्त भावना और क्या होगी एक और एक दो आचार्य मिलकर दो नहीं अब ११ हो चुके हैं। एक के पास तड़प और दृढ़इच्छाशक्ति है तो दूसरे के पास अनुभवों का भण्डार एवं ऐतिहासिक दृष्टि है। प्रभु करे छत्तीसगढ़ की यह सभा जो कभी पंजाब सभा वेद प्रचार में अग्रणी थी, वही स्वरुप प्राप्त करे। देव दयानन्द के सपनों को यथार्थ में बदल कर एक उदाहरण प्रस्तुत करे। ऋग्वेद का अन्तिम संगठन सूक्त **संगच्छध्वं संवदध्वं** का प्रत्येक आर्य साप्तहिक संत्संग के दौरान बड़ी श्रद्धा से पाठ करता है किन्तु उस पर आचरण करना उसे रास नहीं आता, अनेक स्थानों पर सभा संगठनों में धन को लेकर दो फाड़ की स्थिति निर्मित हो गई है, इस परिदृश्य में छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का यह उदारतापूर्ण कदम न केवल सराहनीय है अपितु दूसरी सभाओं के लिए एक बहुत बड़ी प्रेरक मार्गदर्शन है, जो समय की मांग है यदि अब हम नहीं चेते तो वह समय बड़ी जल्दी आने वाला है जब कोई समानान्तर विचार वाले घूसकर हमें ही अंगूठा दिखा देंगे और दयानन्द का यह मिशन समय से पहले ही इतिहास की वस्तु बन जाएगा, आर्यजन आत्मनिरीक्षण करें। डॉ. कमलनारायण आर्य जी के त्याग का भी हम शत् शत् नमन् एवं वंदन करते हैं। **– सम्पादक**

गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव

गतवर्षो की भांति इस वर्ष भी गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला झाल, टीकरी जानी, मेरठ में **मकर सौर संक्रान्ति के पावन अवसर पर १३ व १४ जनवरी २०१८ शनिवार व रविवार को वार्षिकोत्सव** हर्षोल्लास मनाया जा रहा है। १० जनवरी २०१८ को प्रारम्भ किये गये यजुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति, नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार तथा वेदारम्भ संस्कार १४ जनवरी २०१८ को होगा। जिसमें समागत विद्वानों के प्रवचन एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशकों के भजन, ब्रह्मचारियों के आकर्षक एवं रोचक बौद्धिक एवं शारीरिक बल प्रदर्शन जैसे कार्यक्रम होंगे। आप सभी वेदानुरागी महानुभाव, इष्टमित्रों सहित सपरिवार गुरुकुल प्रभात आश्रम में सादर आमंत्रण है।

निवेदक : कुलाधिपति–स्वामी विवेकानन्द सरस्वती, प्रधान–विवेक शेखर, मंत्री–डॉ. वाचस्पति

आर्यसमाज सापलहर (पदमपुर) उड़ीसा का २६वाँ वार्षिक उत्सव सम्पन्न

सापलहर (ओड़िशा) । आर्यसमाज सापलहर तह. पदमपुर जिला बरगड़ ओड़िशा का २६वाँ वार्षिक उत्सव दिनांक १० और ११ दिसम्बर को बड़े हर्ष व उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। इसे सफल बनाने के लिए आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान पं. वीरेन्द्र पंडा भद्रक, आचार्य वृहस्पति जी, गुरुकुल नवप्रभात आश्रम, डॉ. सुदर्शन देव जी गुरुकुल हरिपुर, श्री खुशीराम पांडे जी, आचार्य प्रेमप्रकाश शास्त्री, श्री परीक्षित शास्त्री आदि पधारे थे। मानव जीवन की समस्याएँ और उनसे बचने के उपाय, आत्म उन्नति के साधन, धर्मार्थ चतुष्टय आदि विषयों पर वेदानुकूल सारगर्भित प्रवचन हुए। समस्त अंचल वासियों ने दो दिन के यज्ञ में श्रद्धा के साथ अपनी पवित्र आहुति प्रदान की। पतंजलि योग समिति सापलहर की कन्याओं के द्वारा योग व व्यायाम प्रदर्शन, गांव की महिलाओं के द्वारा पैदल चाल, चम्मच-कंचा प्रतियोगिता व अन्य प्रतियोगिताएँ, बालक-बालिकाओं के द्वारा गीत, भजन, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा हास्य कवि सम्मेलन आकर्षण का केन्द्र थे। आर्यसमाज सापलहर ओड़िशा व छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों में महर्षि दयानन्द के विचारों को फैलाने में निरन्तर लगा हुआ है। संपूर्ण कार्यक्रम के समन्वयक श्री टिकनू आर्य ने सभी विद्वानों व इस अनुष्ठान को आगे बढ़ाने में सहयोग देने वाले महानुभावों का स्वागत किया और सभी आर्य जनों को धन्यवाद दिया। शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समपान हुआ।

संवाददाता : मंत्री आर्यसमाज सापलहर ओड़िशा

आर्यसमाज बड़ेपन्धी का 24 वाँ वार्षिक महोत्सव एवं मकर संक्रान्ति महापर्व १४ जनवरी १८ को

आपको आमंत्रित करते हुये अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा से संबद्ध **आर्यसमाज बड़ेपन्धी** (महासमुन्द)के पावन धरा पर आर्यसमाज एवं समस्त ग्रामवासी के तत्वावधान में **दिनांक 14 जनवरी 2018 (रविवार)** को सूर्य का मकर राशि में प्रवेश होने पर **मकर संक्रान्ति महापर्व** का आयोजन किया जा रहा है। अतः आप समस्त धर्मप्रेमी सज्जनों से अनुरोध है कि आप सपरिवार एवं ईष्ट मित्रों सहित पधार कर कार्यक्रम को सफल बनाते हुए पुण्य के भागी बनें।

वैष्णव आर्य (प्रधान, आर्यसमाज बड़ेपन्धी) एवं समस्त ग्रामवासी बड़ेपन्धी

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515, आई.एफ.एस.सी. SBIN0009075 कोड नं. अथवा देना बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. 107810002857 आई.एफ.एस.सी. BKDN0821078 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक/देना बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. 0788-4030972 द्वारा सूचित करते हुए या अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. 9770368613 में सम्पर्क कर सकते हैं।**

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. 9826363578

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001, फोन : 0788-4030973

महर्षि दयानन्द सेवाश्रम प्रांगण टाटीबन्ध रायपुर में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर सम्पन्न तीन दिवसीय विश्व कल्याण महायज्ञ की चित्रमय झलकियाँ

CHH-HIN/2006/17407 जनवरी 2018 डाक पंजी. छ.ग./दुर्ग संभाग / 99/2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लायसेंस नं. : TECH/1-170/CORR/CH-4/2017-18-19

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।
प्रेषक : "अग्निदूत", हिन्दी मासिक पत्रिका, कार्यालय, छ.ग. प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) 491001